महामहिम घुमक्कड़

खलील जिब्रान

अनुवादक : ज़ेहन-निशीन

अनुराग की एक प्रस्तुति विवश जनता के नाम

Everyoung Global Intellectual Foundation

महामहिम घुमक्कड़

खलील जिब्रान

अनुवादक : ज़ेहन-निशीन

अनुराग की एक प्रस्तुति विवश जनता के नाम

Everyoung Global Intellectual Foundation

© सर्वाधिकार सुरक्षित। निजी अध्ययन, अनुसंधान, समालोचना अथवा समीक्षा के उद्देश्यों के लिए किसी भी उचित उपयोग के अतिरिक्त, किसी भी व्यावसायिक उद्देश्य के लिए इस प्रकाशन का कोई भी भाग कॉपीराइट के स्वामी की पूर्व अनुमति बिना प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

सर्वाधिकार एवर यंग ग्लोबल इन्टेलेक्चुवल फाउन्डेशन, काठमाण्डौ, नेपाल के नाम सुरक्षित हैं।

प्रथम प्रकाशन : 2016 ई.

ISBN: 978-99946-898-6-6
Everyoung Global Intellectual Foundation
Ward 11, Gokarneshwor Municipality,
Kathmandu, NEPAL
Website: www.eygif.org
Contribution: NRs: 800/= or USD 8.00

साहित्य के संसार की एक उत्कृष्ट कृति

प्रस्तावना

मानव निवास एवं रहन-सहन तथा पर्यावरण के हर क्षेत्र में निर्दयी द्वन्द्वों का संसार, अत्यन्त दुर्भाग्यवश, हमारा जगत है। इस परिस्थिति का सबसे बड़ा उदाहरण सेना, पुलिस, अदालतों, कारागारों तथा इन सब की आधारभूत संरचना, जैसे अस्त्रशस्त्र आदि हैं, जो विश्व के उत्पादन का एक तिहाई से आधा समाप्त कर जाते हैं, और जो शेष पर, न केवल प्रभुत्व जमाए बैठे हैं, अपितु उसे सत्यानाश करने के गंभीर भय का स्रोत भी हैं।

हम युद्ध की एक प्रणाली के चंगुल में जकड़े हुए हैं, जिससे हमारी कोई सुरक्षा नहीं है।

जिस तरह से हम से हो सके, हमें इस युद्ध में लड़ना ही होगा, और वर्तमान संसार की इन विनाशकारी परिस्थितियों के विरुद्ध संग्राम करने के लिए हमने अपना सम्पूर्ण प्रयास करने का चयन किया है।

हमारा शस्त्र साहित्य है। और हमारे प्रथम आक्रमण का आरम्भ इन कृतियों से हो रहा है। इन का सेनापति खलील जिब्रान है।

खलील जिब्रान (1883 से 1931 ई) इस जगत के करोड़ों लोगों का प्रिय लेखक बना, और है, और यह अकारण नहीं है।

खलील जिब्रान की कृतियों के उत्तमतर बोध एवं उन से अधिक आनंद पाने के लिए मानव-दर्शन के विकास के इतिहास की थोड़ा सी समीक्षा करना आवश्यक है।

पुनर्जन्म होने की परिकल्पना प्राचीन है तथा इसे सम्भवतः प्रकृति के सामान्य अवलोकन से प्राप्त किया गया है : दिन के पश्चात् रात और रात के बाद दिन का आगमन; दिवाकर का लुप्त हो जाना तथा पुनः प्रकट होना; ऋतुवों

की आवर्ती प्रकृति, वृक्षों एवं वनस्पतियों पर पत्तियों को प्रकट होना तथा शरद ऋतु में उनका उतर जाना...

महात्मा बुद्ध ने अपने देहावसान के क्षण में शोकाकुल अपने शिष्य, आनंद को सांत्वना दी थी, "नहीं आनंद, रोते नहीं। क्या मैंने यह पहले ही तुमसे नहीं कहा है कि हमारे प्रियजनों से हमारा वियोग अपरिहार्य है? जो कुछ भी जन्मा है, जो कुछ भी उत्पन्न होता है, अनुकूलित किया जाता है, स्वयं उसके भीतर ही उसके विनाश की प्रकृति छुपी होती है। इसका कोई अन्य विकल्प हो ही नहीं सकता है।"

यूनानी दार्शनिक अनाक्सागोरस (500–428 ई. पू.) ने घोषणा की, "भौतिक संसार में, प्रत्येक वस्तु में समस्त वस्तुओं के अंश समावेश होते हैं।" उदाहरण के लिए, "कोई पशु जो आहार करता है, वह उसकी अस्थि, बाल, मांस आदि में परिवर्तन होता है, अतः अवश्य इसमें पहले ही वे सभी तत्व होने चाहियें।" यहाँ यह कहना भी उचित होगा कि एथेंस के न्यायालय ने अनाक्सागोरस के विरुद्ध मृत्युदण्ड का निर्णय सुनाया, क्योंकि उसने "दिनकर एक अग्निमय चट्टान है" कहा था, जो धर्म के सिद्धांत के विपरीत था। परन्तु अनाक्सागोरस ने एथेंस को सदा के लिए त्याग कर खुद को बचा लिया था।

यथार्थता अथवा अयथार्थता की अवधारणा विकास के कई चरणों से गुज़री और विभिन्न अवधियों के पश्चात् कई मानकों तक पहुँची। इस संदर्भ में यहाँ एक संबंधित कीर्तिमान उल्लेखनीय है जो शंकराचार्य में दिखाई देता है, जिस (शंकराचार्य) ने हर किसी वस्तु को एक भ्रम (माया) माना, वह इस कारण कि कोई भी चीज़ स्थायी नहीं है। फिर सूफीमत (रहस्यवाद) और अग्रसर हुआ तथा उसने वहदत-उल वजूद (अस्तित्व की एकता) और वहदत-अश शहूद (साक्ष्य की एकता) के साथ साथ प्राचीन अर्बी अवधारणायें बरज़ख (वह स्थान जहाँ, उनके कथन

अनुसार, आत्मायें पृथ्वी पर अवतरण से पहले आवास करतीं हैं), एराफ़ (पृथ्वी से प्रस्थान पश्चात् आत्माओं का आवास-स्थान) के साथ साथ साबिता, एयान एवं जोया (सूफीमत के दृष्टिकोण में तीन आध्यात्मिक चरण) तथा अन्य कई सारी अवधारणाओं को आगे बढाया।

विचार की यह सरिता अब तक के अपने अंतिम गन्तव्य-स्थान पर हेगल के द्वंद्ववाद में पहुँची (अर्थात् गमनशील यथार्थ—यथार्थता तथा अयथार्थता की अवधारणाओं पर परिचर्चा के बजाय), जिसका प्रदर्शन साहित्य में खलील जिब्रान की कृतियाँ हैं।

द्वंद्ववाद के चार आधारभूत सिद्धांतों का (जहाँ तक मैंने उन्हें समझा है) यहाँ उल्लेख करना आवश्यक होगा।

1) न्यूनतम कण से ले कर सम्पूर्ण ब्रह्मांड तक, हर अवस्थित चीज़ की सीमाएं हैं। दिन, ऋतु, जीवन-काल, युग, पृथ्वी, सौर प्रणाली, आकाशगंगा, दृश्य एवं अदृश्य ब्रह्मांड... हर किसी वस्तु की भौतिक तथा सामयिक सीमाएं हैं।

2) सीमित वस्तु असीमित से बनी है तथा असीमित सीमित से। उदाहरणार्थ, संख्या-रेखा के किसी भी क्षेत्र में असीमित बिन्दु होते हैं, और रेगिस्तान सहारा एवं संसार के सभी रेगिस्तानों की रेत के कण गिने जा सकते हैं। यहाँ यह व्यक्त करना अनिवार्य है कि असीमित केवल एक अनंत नहीं, अनंत अनंत हैं। उदाहरणार्थ, एक से दो तक जो अनंत बिन्दु हैं, और तीन से चार तक जो अनंत बिन्दु हैं, वे पृथक् पृथक् हैं।

3) सभी चीजें (प्रसन्नता, पीड़ा, मित्रता, शत्रुता, जीवन, कार्य, योगदान, मानवीय संबंध...) सार्थक हैं, किन्तु केवल अपनी सीमाओं एवं परिमाओं में, इन परिमाओं के बाहर सब कुछ अपनी संगतता एवं अर्थ खो देता है। यह परिमायें भौतिक हो सकतीं हैं (यदि आप न्यूयॉर्क या

कराची में रहते हैं तो आप अपने घर में सिंह के आने तथा आप के साथ रात का भोजन करने की अपेक्षा नहीं कर सकते हैं) अथवा सामयिक हो सकतीं हैं (आप ग्रीष्मकाल में शीतकालीन ठंड की अनुभूति करने की आशा नहीं कर सकते हैं)।

4) किसी भी चीज़ की एक दिशा में हो रही निरन्तर अग्रसता एक विशेष स्थान पर पहुँच कर अपने विपर्यय में परिवर्तित होती है। उदाहरणार्थ, दिन रात में और रात दिन में बदल जाते हैं। प्रतिस्पर्धा एकाधिकार की ओर तथा एकाधिकार प्रतिस्पर्धा की ओर अग्रसर होती है। "लोकतंत्र" "निरंकुशता" तथा "निरंकुशता" "लोकतंत्र" में तब्दील होती है। वसन्त ऋतु शरद ऋतु में बदल जाता है तो उसका विपरीत भी होता है...

द्वंद्ववाद के शेष सिद्धांत तथा तीन नियम इस प्रस्तावना के अभिप्राय से अलग हैं।

पुनर्जन्म होने की परिकल्पना, जन्मे हुए प्रत्येक चीज़ का संगठन एवं विखंडण, प्रत्येक वस्तु में समस्त वस्तुओं के अंश समावेश होने की बात, भ्रम (माया), सूफीमत (रहस्यवाद) की अवधारणाओं तथा द्वंद्ववाद के सिद्धांतों के विषय में इस प्राथमिक बोध के साथ, अब आप खलील जिब्रान की प्रतिभा के संग अपनी संगति का भरपूर आनंद उठा सकते हैं।

खलील जिब्रान की चित्रकारी को इन पाठ्य कृतियों में हम ने समावेश नहीं किया, वह केवल इस लिए कि भारत, पाकिस्तान तथा नेपाल में संस्कृति का स्तर अभी "लज्जास्पद" है, यद्यपि लोग अस्पतालों में जाते हैं, स्त्रीरोग विभाग में अपना परीक्षण करवाते हैं, शल्यचिकित्सा करवाते हैं, तथा अपने सम्पूर्ण परिधान उतार कर अपने निर्वस्त्र शरीर शल्यचिकित्सकों, उनके सहभागियों और अन्य लोगों के सुपुर्द करते हैं, और यद्यपि महावीर जैन,

ललेशवरी अतः अन्य लोगों की एक विस्तृत श्रृंखला ने कोई वस्त्र धारण नहीं किए, तथा लोगों ने उन्हें उच्चतम सम्मान से भी सम्मानित किया।

पाठकों में से किसी को भी वैसी “लज्जा” से बचाने के लिए, हमने इन पुस्तकों में चित्रकारी शामिल न करने का निर्णय किया। जो पाठक उन चित्रों का अवलोकन करना चाहते हैं वे

http://www.inner-growth.info/khalil_gibran_prophet/html/galleries/gibran_gallery1.htm

पर जा सकते हैं।

अधिक किसी विलंब बिना, आइये अपनी यात्रा आरम्भ करते हैं। हमें आशा है कि इन पुस्तकों से आप आनंदमग्न होंगे तथा यह आपके हितों का अभिषेक करेंगी।

ज़ेहन निशीन
मार्च 4, 2016

खलील जिब्रान

(1883 से 1931 ई)

विषय सूची

प्रस्तावना	i
महामहिम घुमक्कड़	1
वेशभूषा	3
गरुड़ तथा चंडोल	4
प्रीति गान	6
रोदन एवं हँसी	7
मेले में	8
दो राजकुमारियाँ	10
बिजली की चमक	12
सन्यासी एवं वन्य पशु	13
देवदूत एवं बच्चा	15
मोती	17
शरीर एवं आत्मा	18
सम्राट	19
रेत पर	24
तीन उपहार	25
शांति एवं युद्ध	27
नृतयांगना	28
दो संरक्षक स्वर्गदूत	29
मूर्ति	32
विनिमय	34
प्यार तथा नफरत	35
सपने	36
पागल व्यक्ति	37
मेंढकें	39
विधि एवं विधान-व्यवस्था	41
कल, आज और कल	43

विषय सूची

दार्शनिक तथा मोची 45
सेतुओं के वास्तुकार 46
ज़ाद का मैदान 48
स्वर्णिम कमरबन्द 50
लाल मिट्टी 52
पूर्ण चन्द्र 53
एकान्तवासी ईश्वरदूत 54
प्राचीन, दीर्घकालिक मदिरा 55
दो कवितायें 57
श्रीमती रुथ 59
चूहा तथा बिल्ली 60
श्राप 62
अनार 63
परमेश्वर तथा कई ईश्वर 64
वह, जो बहरी थी 66
तलाश 69
राजदण्ड़ 71
रास्ता 72
व्हेल मत्स्य एवं तितली 74
प्रतिच्छाया 75
संक्रामक शांति 76
सत्तर 78
परमेश्वर की तलाश 79
सरिता 80
दो शिकारी 82
दूसरा महामहिम घुमक्कड़ 84

महामहिम घुमक्कड़

मैं उससे चौराहे पर मिला, उसके शरीर पर सिर्फ एक लम्बा अंगरखा तथा हाथ में एक छड़ी थी, और उसका चेहरा व्यथा से पीला हुआ था। और हमने एक दूसरे को नमस्कार किया, तथा मैंने उससे कहा, “मेरे घर आकर मेरे अतिथि बनो।”

और वह आ गया।

मेरी पत्नी तथा मेरे बच्चे हमसे दहलीज़ पर मिले, तथा वह उन पर मुस्कुराया, एवं उन्होंने इसके आगमन को बहुत पसंद किया।

फिर हम सब दस्तरख़ान पर एक साथ बैठे और हम उस व्यक्ति को लेकर प्रसन्न थे क्योंकि उसके साथ एक मौनत्व एवं एक रहस्य संबद्ध थे।

अतःपरं रात्रि के भोजन उपरांत हम अग्नि के आसपास एकत्र हुए और मैं ने उसे उसके पर्यटन के सन्दर्भ में पूछा।

उस रात, एवं अगले दिन भी उसने हमें बहुत सारी कथायें सुनायीं, परंतु तत्काल जो मैं लिखने जा रहा हूँ वह उन दिनों की तिक्तता से जन्मी है, यद्यपि वह स्वयं करुणायुक्त था; और यह कहानियाँ उसके रास्ते की धूल एवं धैर्य के विषय में हैं।

और तीन दिवस पश्चात्, जब वह हमें छोड़ कर गया, तो हमें यह नहीं लगा कि एक अतिथि चला गया, अपितु हमें यों लगा कि हम में से ही एक परिवारजन अब भी बाहर उद्यान में है तथा अभी पुनः भीतर नहीं आया है।

वेशभूषा

एक दिन सुंदरता एवं भद्दा की भेंट एक समुद्र-तट पर हुई। तथा उन्होंने एक दूसरे से कहा, “चलो इस समुद्र में स्नान करते हैं।”

तब वे अपने अपने कपड़े उतारकर पानी में तैरने लगे। और थोड़ी देर के बाद, भद्दा तट पर आया तथा सुंदरता के वस्त्र पहन कर चला गया।

तब सुंदरता भी समुद्र से बाहर निकली तथा अपने वस्त्र नहीं पाए, और वह इतनी लजालू थी कि नग्न नहीं रह सकती थी, अतः उसने भद्दा के कपड़े धारण किए। और वह भी अपने रास्ते चली गई।

अतःएवं आज तक देवियाँ एवं सज्जन एक को दूसरा अथवा दूसरी समझ बैठते हैं।

तदापि कुछ लोग ऐसे हैं जिन्होंने सुन्दरता की मुखाकृति देखी है, तो चाहे उस का परिधान जो भी हो, वह उससे ज्ञात हैं। और कुछ व्यक्ति ऐसे भी हैं जो भद्दा के चेहरे को पहचानते हैं, एवं पहनावा उसे उनकी आँखों से गोप्य नहीं रखता है।

गरुड़ तथा चंडोल

एक गरुड़ एवं एक चंडोल की मुलाकात एक उच्च पहाड़ी पर स्थित एक चट्टान पर हुई । चंडोल ने कहा, "अभिवादन श्रीश्री !" गरुड़ ने उसे तिरस्कारपूर्ण नजरों से देखा और धीमे स्वर में बोला, "अभिनन्दन ।"

चंडोल ने कहा, "मुझे आशा है कि आपका सब कुछ ठीक ठाक चल रहा होगा, श्रीश्री !"

"हाँ," गरुड़ ने कहा । "हम पूर्णतः सकुशल हैं । किंतु क्या तुझे यह बोध नहीं है कि हम पक्षियों के सम्राट हैं एवं तुझे हमसे तब तक संबोधित नहीं होना चाहिए जब तक कि हम स्वयं बोल न चुके हों?"

चंडोल बोला, "मुझे लगता है कि हम सब एक ही परिवार के हैं ।"

गरुड़ ने उसे घृणा एवं तिरस्कार से देखकर कहा, "कब, किसने कहा कि मैं और तू एक ही परिवार से हैं?"

तब चंडोल ने कहा, "परंतु मैं आपको स्मरण कराना चाहता हूँ कि मैं भी उतनी ही ऊँची उड़ान भर सकता हूँ जितनी कि आप, और मैं गा सकता हूँ एवं इस धरती पर रहने वाले अन्य प्राणियों को आनन्द प्रदान कर सकता हूँ । किंतु आप न तो प्रसन्नता प्रदान कर सकते हैं न ही प्रमोद ।"

तब गरुड़ क्रोधित हुआ और उसने कहा, "प्रसन्नता एवं प्रमोद ! तू, धृष्ट एवं तुच्छ जन्तु ! अपनी चोंच की एक ही ठूँस से मैं तुझे नष्ट कर सकता हूँ । तू जो भी है

मेरे चंगुल के बराबर ही है ।”

तब चंडोल उड़ा और आकर गरुड़ की पीठ पर बैठ गया तथा उसके बाल एवं पर खुरचने लगा । गरुड़ झुँझलाया और वह तीव्रता के साथ ऊँचाई में उड़ा ताकि वह उस छोटी सी चिड़िया से पीछा छुड़ा सके। परंतु वह ऐसा करने में विफल रहा । अतः और अधिक झुँझलाया हुआ, अपने भाग्य को कोसता हुआ, वह अंततः उसी ऊँची पहाड़ी की उसी चट्टान पर जा उतरा, जबकि वह छोटी सी चिड़िया उसकी पीठ पर विराजमान ही थी ।

ठीक उसी समय एक छोटी सी कछुवी वहाँ पहुँच गई एवं यह दृश्य देखकर खिलखिला कर हँस पड़ी, और इतना बेतहाशा हँसी कि लगभग पीठ के बल पलट गई ।

गरुड़ ने कछुवी को हेय नज़रों से देखा और कहा, “ए सुस्ती से रेंगने वाली जन्तु ! ए ज़मीन पर स्थायी रूप से चिपके रहने वाली ! तू किस बात पर हँस रही है?”

इस पर कछुवी ने उत्तर दिया, “ऐसा क्या हुआ कि आप को एक घोड़ा बनाया गया है और एक छोटी सी चिड़िया आप पर सवार है, परंतु वह छोटी चिड़िया बेहतर है ।”

तथा गरुड़ ने उससे उत्तर दिया, “जा और अपना काम कर ! यह मेरे भाई, चंडोल, तथा मेरे बीच एक पारिवारिक विषय है ।”

प्रीति गान

एक बार यों हुआ कि एक कवि ने एक प्रीति गान लिखा, जो आकर्षक था । तब उसने कई प्रतिलिपियाँ उतारीं तथा देवियों एवं सज्जनों, दोनों लिंग के साथियों एवं परिचित व्यक्तियों को भेजीं, यहाँ तक कि पहाड़ों के पार रहने वाली एक युवती भी को एक प्रतिलिपि भेजी, जिस से उस की भेंट केवल एक बार हुई थी ।

एक या दो दिनों पश्चात् युवती की ओर से एक सन्देशक एक पत्र लेकर आया । और उस पत्र में लिखा था, "तुम्हें विश्वास दिलाना चाहती हूँ, तुम ने जो प्रीति गान मेरे लिए लिखा है, वह मेरे हृदय को छू गया । अब आओ, तथा मेरे पिता जी तथा माता श्री से मिलो, और हम अपने विवाह की व्यवस्था करेंगे ।"

उस पर कवि ने जवाबी पत्र में यह लिखा, "मेरी मित्र, वह कवि के हृदय से निकलने वाला एक प्रीति गान था, जिसे हर पुरुष हर महिला के लिए गाता है ।"

तब उस हसीना ने उसे अगले पत्र में लिखा, "कपटी ! शब्दों के झूठे ! सिर्फ तुम्हारे कारण, आज से मेरी ताबूत उठने तक सभी कवियों से मैं घृणा करूँगी ।"

रोदन एवं हँसी

नील सरिता के तट पर संध्याकाल में एक लकड़बग्घे की मुलाकात एक घड़ियाल से हुई एवं दोनों ने ठहर कर एक दूसरे को अभिवादन से सम्मानित किया।

लकड़बग्घे ने संवाद का श्री गणेश किया एवं पूछा, "आजकल आपके दिन कैसे गुज़र रहे हैं, महोदय?"

घड़ियाल ने उत्तर दिया, "सब कुछ चौपट है। अपनी व्यथा एवं पीड़ा में कभी कभी रोता हूँ तो सभी प्राणी सदैव यही टिप्पणी करते हैं, 'यह केवल घड़ियाली अश्रु हैं।' और यह बात मुझे अवर्णनीय सीमा तक आहत करती है।"

तब लकड़बग्घा उससे संबोधित हुआ, "आप अपनी वेदना एवं कष्ट की बात कर रहे हैं, परंतु मेरे आख्यान पर भी विचार करें।

"एक क्षण के लिए मैं संसार की सुंदरता, इसकी अद्‌भुतताओं एवं इसके चमत्कारों में दृष्टिमग्न होता हूँ, और केवल आह्लाद के भाव में वैसे ही हँसता हूँ जैसे दिन हँसता है। तो अरण्य के प्राणी कह उठते हैं, 'यह तो लकड़बग्घे की हँसी है अन्य कुछ नहीं।'"

मेले में

मेले में ग्रामीण क्षेत्र से एक अत्यधिक सुरूप युवती आई। उसके चेहरे पर नलिनी एवं गुलाब खिले हुए थे। उसकी लट में सूर्यास्त की लालिमा के दृश्य का वास था, तथा उसके होंठों पर साक्षात प्रभात मुस्कुरा रहा था।

ज्यों ही वह अपरिचित हसीना युवाओं की आँखों के समक्ष प्रकट हुई, वह उसकी इच्छा करने लगे, और उसके आसपास चिपकने लगे। कोई उसके साथ नृत्य करने की कामना लिए, तो कोई अन्य उसकी प्रतिष्ठा में एक केक काटने का इच्छुक। और वे सभी के सभी उसके गाल चूमने के वांछारत थे। क्योंकि किसी भी हाल में, क्या वे मेले में नहीं थे?

परंतु युवती आतंकित हुई तथा चौंकी, और उसने उन जवानी के विषय में बुरा मान लिया। उसने उन्हें डाँटा, तथा एक या दो व्यक्तियों को चेहरे पर तमाचा भी मारा। फिर वह उनसे दूर भाग गई।

अतःपरं उस संध्याकाल में अपने घर के पथ पर चलते चलते वह अपने हृदय में कह रही थी, “मैं खिन्न हूँ। यह पुरुष कितने दुर्व्यवहारी एवं असभ्य हैं। यह धैर्य की सभी सीमाओं से परे की बात है।”

एक वर्ष बीत गया, जिसके दौरान उसी सुरूप हसीना ने मेलों तथा जवानों के बारे में बहुत सोचा। फिर वह मेले में अपने चेहरे पर नलिनी एवं गुलाब तथा अपनी जटाओं में लालिमा तथा अपने होंठों पर प्रभात की

मुस्कान लिए आई ।

परंतु अब युवकों ने उसे देखकर, उस से अपना रुख मोड़ लिया । और सारा दिन वह अवांछित एवं अकेला रही ।

फिर शाम को अपने घर के रास्ते पर अग्रसर, अपने हृदय में वह चिल्लाता रहा, “मैं बेज़ार हूँ । यह आदमी कितने दुर्व्यवहारी एवं नीच पोषण के हैं । यह धैर्य की सभी सीमाओं से परे की बात है ।”

दो राजकुमारियाँ

शिवाकिस नगर में एक राजकुमार रहता था, और उसे सभी पुरुष, महिलायें एवं बालबालिकायें प्रेम करते थे। यहाँ तक कि खेत के पशु भी उससे अभिनन्दन करने उसके पास आते थे।

परंतु सभी लोग केवल यही नहीं कहा करते थे कि उसकी पत्नी, अर्थात् राजकुमारी, उससे प्यार नहीं करती थी बल्कि यह भी कि वह उससे नफरत करती थी।

फिर एक दिन पड़ोस के एक शहर की राजकुमारी शिवाकिस की राजकुमारी से मिलने आई। वे बैठ कर परस्पर बातचीत करने लगीं तथा बातों बातों में उनके पतियों की चर्चा हुई।

शिवाकिस की राजकुमारी भावनाओं की उत्तेजना में बोल पड़ी, "शहज़ादी, तुम्हारे पति से मिली तुम्हारी खुशियों पर मुझे ईर्ष्या होता है, हालांकि तुम्हारी शादी हुए इतने सारे वर्ष बीत चुके हैं। मैं तो अपने पति से नफ़रत करती हूँ। वह केवल मेरा ही नहीं है, और मैं वास्तव में एक सबसे अभागी महिला हूँ।"

तब अतिथि राजकुमारी ने उसे घूर कर देखा और कहा, "मेरी सहेली, सच्ची बात तो यह है कि तुम अपने पति से प्यार करती हो। हाँ, और वास्तव में अभी भी तुम में उसके लिए वह उत्साह एवं कामना है जो बुझी नहीं है, एवं वही महिला में जीवन का वृत्तान्त है, जैसे

ऋतुराज का प्रतीक्षारत उद्यान होता है। परंतु मुझ पर एवं मेरे पति पर अफसोस करो कि हम एक दूसरे को केवल मौन धैर्य से सहन करते हैं। तब भी तुम तथा दूसरे लोग उसे खुशी ठान लेते हैं।

बिजली की चमक

एक तूफानी दिन में एक धर्माध्यक्ष अपने बड़े गिरजाघर में था, तथा एक गैर-इसाई महिला अंदर आकर उसके सामने खड़ी हो गई और बोली, “मैं ईसाई नहीं हूँ। क्या मेरे लिए नरक की आग से मुक्ति संभव है?”

इस पर धर्माध्यक्ष ने उस महिला की ओर देखा तथा यह उत्तर दिया, “नहीं, मोक्ष केवल उन लोगों के लिए है जिन्हें जल तथा दिव्य-आत्मा से बपतिस्मा दिया जाता है।”

और जैसे ही उसने यह बात कही, आकाश से एक बिजली गड़गड़ाहट के साथ गिरजाघर पर गिरी तथा वह वर्णनातीत ज्वाला हो गयी।

तब नगरवासी दौड़ते हुए आए और उन्होंने उस महिला को तो बचा लिया परंतु धर्माध्यक्ष जल कर अग्नि का भोजन हो गया।

सन्यासी एवं वन्य पशु

एक बार का उल्लेख है कि पहाड़ियों के बीच एक सन्यासी रहता था । उसकी अन्तरात्मा पवित्र तथा हृदय निर्मल था ।

मैदानों में रहने वाले सभी पशु तथा पवन में उड़ान भरने वाले सभी पक्षी जोड़यों में उसके पास आया करते थे और वह उनसे बातें किया करता था । वह सब उसके प्रवचन प्रसन्नतापूर्वक श्रवण करते, उसके समीप एकत्र होते, तथा रात्रि के आगमन से पूर्व प्रस्थान नहीं होते थे, जब अपने आशीष के साथ वह उन्हें वायु एवं वन की शरण में देकर विदा करता था ।

एक साँझ जब वह प्रेम के विषय में प्रवचन दे रहा था, एक तेन्दुवे ने अपना शीश उठाया एवं तपस्वी से कहा, “आप हमें प्रेम एवं प्रीति के सन्दर्भ में बता रहे हैं । महाशय ! हमें यह बताइए कि आपकी संगिनी कहाँ है?”

तब तपस्वी ने कहा, “मेरी संगिनी नहीं है ।” फिर पशुओं तथा पक्षियों की सभा से एक अद्‌भुत एवं तीव्र ध्वनि निकली और वह परस्पर कहने लगे, “वह हमें प्रीति एवं दांपत्य का उद्धरण कैसे दे सकते हैं जबकि उनके सन्दर्भ में उन्हें स्वयं ज्ञान नहीं है?”

और मौनत्व एवं तिरस्कार के साथ वह सब उसे अकेला छोड़ कर चले गए ।

उस रात वह सन्यासी अपनी चटाई पर मुँह के बल लेटा रहा, और वह फूट फूट कर अश्रु बहाता एवं अपना वक्षस्थल पीटता रहा।

देवदूत एवं बच्चा

एक बार देवदूत शरिया की मुलाकात एक बगीचे में एक बच्चे से हुई। बच्चा उनके पास दौड़ कर आया और बोला, "शुभ प्रभात, श्रीमान्!"

तथा देवदूत ने कहा, "तुम्हें भी शुभ प्रभात, श्रीमान्!" और एक क्षण पश्चात् पुनः कहा, "मैं देख रहा हूँ कि तुम अकेले हो।"

तब बच्चे ने हँसी तथा खुशी के साथ कहा, "अपनी आया से पीछा छुड़ाने में काफी समय लगा। वह समझती है कि मैं उन झाड़ियों के पीछे हूँ, किंतु क्या आप नहीं देखते कि मैं यहाँ हूँ?" तब उसने द्वदूत के चेहरे को ध्यान से देखा और पुनः बोला, "आप भी तो अकेले हैं। आपने अपनी दाई के साथ क्या किया?"

देवदूत ने उत्तर दिया, "अरे हाँ, यह एक अलग कथा है। वास्तव में मैं उसके हाथ से प्रायः नहीं निकल सकता हूँ। परंतु अभी, जब मैं इस उद्यान में आया, वह मुझे झाड़ियों के पीछे खोज रही थी।"

बच्चे ने तालियाँ बजाईं तथा चिल्लाकर कहा, "तो आप भी मेरी भाँति खो गए हैं! क्या खो जाना अच्छी बात नहीं है?" तब उसने पूछा, "आप कौन हैं?"

देवदूत ने उत्तर दिया, "लोग मुझे देवदूत शरिया कहते हैं। और तुम बताओ, तुम कौन हो?"

"मैं केवल मैं हूँ," बच्चे ने जवाब दिया, "और मेरी आया मुझे देख रही है एवं उसे नहीं पता कि मैं कहाँ हूँ

।”

तब देवदूत ने घूर कर आकाश की ओर देखा, और कहने लगा, “मैं भी क्षण भर अपनी आया से दूर हो गया हूँ। परंतु वह मुझे ढूँढ लेगी।”

बच्चे ने फिर कहा, “मैं समझता हूँ कि मेरी भी मुझे ढूँढ निकाले गी।”

उसी क्षण एक महिला की आवाज़ सुनाई दी, जो बच्चे को नाम से पुकार रही थी। “देखा” बच्चा बोलने लगा, “मैंने कहा था ना वह मुझे ढूँढ निकाले गी।”

और ठीक उसी समय एक दूसरी आवाज़ सुनाई पड़ी, “आप कहाँ हैं, शरिया?”

इस पर देवदूत ने कहा, “देखा मेरे बच्चे, उन्होंने मुझे भी ढूँढ लिया है।” तथा अपने चेहरे को ऊपर की ओर उठाकर शरिया ने जवाब दिया, “मैं हाज़िर हूँ।”

मोती

एक कस्तूरा मत्स्य ने अपने पड़ोसी कस्तूरा मत्स्य से कहा, “मेरे शरीर के भीतर तीव्र दर्द है। यह असहनीय एवं पूरे शरीर में है, और मैं अत्यधिक कष्ट में हूँ।”

और दूसरा कस्तूरा मत्स्य ने धृष्ट संतोष से उत्तर दिया, “धन्य हो व्योम एवं सागर, मेरे भीतर कोई व्यथा नहीं है। मैं भीतर एवं बाहर परिपूर्ण हूँ।”

इसी बीच एक केकड़ा वहाँ से गुज़र रहा था और उसने दोनों कस्तूरा मत्स्यों की वार्ता सुनी, तथा वह उस मत्स्य से संबोधन करने लगा जो अंदर एवं बाहर दोनों अवस्था में परिपूर्ण था, “निस्संदेह, तुम पूरे के पूरे स्वस्थ तथा पूर्ण हो, परंतु जो दर्द तुम्हारा पड़ोसी सहन कर रहा है वह बेहद सुन्दर मणि है।”

शरीर एवं आत्मा

एक पुरुष तथा एक महिला वसंत के आगमन पर खोली हुई एक खिड़की के पास बैठे थे। वे दोनों एक दूसरे के करीब बैठे हुए थे। और महिला ने कहा, “मैं तुमसे प्यार करती हूँ। तुम अभिराम हो, और धनी हो, तथा तुम सदैव अच्छे वस्त्रों में रहते हो।”

और उस पुरुष ने कहा, “मैं तुमसे प्यार करता हूँ। तुम एक सुन्दर विचार हो, एक ऐसी अलग चीज़ जिसे हाथ में समया नहीं जा सकता, तथा तुम मेरे सपनों का एक गीत हो।”

परंतु महिला ने गुस्से में अपना चेहरा उसकी ओर से फेर लिया और वह बोली, “महाशय, कृपया अब मुझे जाने दीजिए। मैं कोई विचार नहीं हूँ, तथा मैं कोई चीज़ नहीं हूँ कि आपके सपनों से गुज़रों। मैं एक महिला हूँ। मैं चाहती हूँ कि आप मुझे चाहें, एक पत्नी के रूप में, तथा अभी अजन्मे बच्चों की माँ के रूप में।”

और वे अलग हो गए।

और वह आदमी अपने हृदय में कह रहा था, “देखो, एक और स्वप्न अब भी कोहरे में बदल रहा है।”

तथा महिला कह रही थी, “बताओ तो, उस व्यक्ति की क्या कहें जो मुझे एक कोहरे एवं सपने में परिवर्तन करता है?”

सम्राट

सादिक देश की जनता ने अपने राजा के विरुद्ध विद्रोह के नारे ऊँचे करते हुए राजमहलको घेर लिया । और सम्राट एक हाथ में अपना मुकुट तथा दूसरे में अपनी राजदण्ड़ लेकर महल की सीढ़ियों से नीचे उतरा । उसके प्रकटन के वैभव ने जनसाधारण पर नीरवता फैलाई, और वह उनके सम्मुख खड़ा हुआ एवं इरशाद फ़रमाया, "मेरे मित्रो, अब जो तुम मेरी प्रजा नहीं रहे, यह लो मेरा मुकुट तथा मेरा राजदण्ड़, इन्हें मैं तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ । मैं तुम में से एक हो जाऊँगा । मैं सिर्फ एक आदमी हूँ, परंतु एक व्यक्ति के रूप में मैं तुम्हारे साथ काम करूँगा कि हमारे भाग्य अच्छे हो जाएँ । राजा की कोई आवश्यकता नहीं है । इसलिए चलो हम खेतों तथा अंगूर के बगीचों में जाकर कंधे से कंधा मिलाकर काम करते हैं । तुम्हें मुझे केवल यह बताना होगा कि मैं किस खेत या द्राक्षा के उद्यान में जाऊँ । अब तुम सब राजा हो ।"

और लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ, तथा उन पर चुप्पी तारी हुई, क्योंकि वह नरेश जिसे उन्होंने अपने असंतोष का स्रोत समझ रखा था, वह अब अपना ताज तथा अपना राजदण्ड़ उनके हवाले करके उनके जैसों में शामिल हो गया था ।

तब उनमें हर कोई अपने रास्ते चला गया, तथा नरपति एक व्यक्ति के साथ खेत में गया ।

परंतु सादिक़ देश में बादशाह के बिना कोई सुधार न हुआ, तथा असंतोष की धुँध भूमि पर छाई रही। लोग बाज़ारों में चिल्लाने लगे कि कोई सरकार होनी चाहिए तथा उनकी सरकार के लिए कोई राजा होना चाहिए। और बड़े बूढ़ों एवं नौजवानों ने मानों कि एक ही आवाज़ में कहा, "हमारा अपना नरेश होगा।"

तब उन्होंने राजा को खोजा तो उसे एक खेत में काम करते पाया, और लोगों ने उसे फिर राजसिंहासन पर बिठाया, तथा उसका मुकुट एवं राजदण्ड़ उसके हवाले कर दिए। और उन्होंने कहा, "अब हम पर शक्ति एवं न्याय के साथ शासन कीजिए।"

और उसने कहा, "ठीक है, मैं तुम पर शक्ति के साथ सचमुच में शासन करूँगा, तथा गगन एवं पृथ्वी के देवता मेरी सहायता करें कि मैं न्याय के साथ शासन चला सकूँ।"

तब नर एवं नारियाँ उसके सामने आये और उससे एक जागीरदार के बारे में शिकायत की जो उनके साथ बुरा व्यवहार करता था, एवं जिसके वे केवल दास थे।

और सम्राट ने भूपति को तुरंत अपने सामने बुलवाया और कहा, "परमेश्वर की तुला में एक व्यक्ति के जीवन का तौल उतना ही होता है जितना दूसरे के जीवन का। और चूँकि तुम्हें अपने खेतों एवं अंगूर के बगीचों में काम करने वालों के जीवन का वज़न करना नहीं आता है, इसलिए तुम को देश निकाला किया जाता है, और तुम देश को हमेशा के लिए छोड़ दोगे।"

अगले दिन राजा के पास लोगों की एक दूसरी श्रेणी आई तथा उसने पहाड़ियों के पार एक नवाब साहिबा के अत्याचार की बात कही, और यह कि उसने कैसे उन्हें दुर्गति तक पहुँचा दिया। तुरंत ही नवाब साहिबा को न्यायालय में पेश किया गया, और राजा ने उसे भी निर्वासन का दंड दिया, एवं कहा, "जो लोग हमारे खेतों में परिश्रम करते तथा हमारे द्राक्षा के उद्यानों की देखभाल करते हैं वह हम से अधिक सज्जन हैं, जो उनकी तैयार की हुई रोटियाँ खाते एवं उनकी निचोड़ी हुई मदिरा पीते हैं। और चूँकि तुम्हें यह पता नहीं है, तुम्हें इस भूमि को छोड़ना तथा इस राष्ट्र से दूर होना होगा।"

तब मर्द एवं औरतें आयीं जिन्होंने बताया कि धर्माध्यक्ष ने उन से पत्थर ढुवाये तथा उन्हें चर्च के लिए तरशवाया, फिर भी उसने उन्हें कुछ नहीं दिया, यद्यपि उन्हें पता है कि धर्माध्यक्ष की तिजोरी सोने तथा चाँदी से भरी पड़ी है जबकि वह भूख एवं आवश्यकता के मारे हैं।

तथा नरपति ने धर्माध्यक्ष को बुलवाया, और जब वह आया तो राजा ने उससे कहा, "वह क्रूस जो तुम अपने सीने पर पहने हुए हो इसका अर्थ जीवन को जीवन देना होना चाहिए। परंतु तुमने तो जीवन से जीवन छीन लिया है तथा दिया कुछ नहीं है। अतः तुम इस राष्ट्र को छोड़ दोगे और फिर कभी वापस नहीं आउगे।"

इस तरह पूरे एक महीने तक हर दिन पुरुष एवं

महिलायें राजा के पास अपने ऊपर किए गए अत्याचारों के बारे में सूचित करने आयीं। और पूरे एक महीने में हर दिन कोई न कोई अत्याचारी देश से निकाला गया।

और सादिक के लोग हैरान हुए, तथा उनके दिलों में खुशी का बसेरा था।

तथा एक दिन बड़े बूढ़े तथा युवा आए और राजा के उच्च भवन को घेर लिया एवं उसे पुकारा। और वह अपने ताज को एक हाथ में तथा राजदण्ड़ को दूसरे में पकड़े हुए आया।

तथा उसने उनसे मुखातिब होकर पूछा, “अब तुम मुझसे क्या चाहते हो? सुनो, मैं तुम्हें वह चीज़ फिर सौंप रहा हूँ जिसे तुमने मेरे हाथ में देने की इच्छा थी।”

परंतु उन्होंने चिल्लाकर अनुरोध की, “नहीं, नहीं, आप हमारे सही सम्राट हैं। आपने अफी साँपों से हमारी पृथ्वी को शुद्ध कर दिया है, तथा आप ने भेड़ियों को नकेल लगा दी है, और हम आप के लिए कृतज्ञता का गीत गाने आए हैं। मुकुट आपका है तथा राजदण्ड़ भी आपकी है।”

तब सम्राट ने कहा, “नहीं, मैं नहीं हूँ। तुम सब स्वयं ही राजा हो। जब तुमने मुझे कमज़ोर एवं गलत शासक समझा, तब तुम स्वयं कमज़ोर एवं गलत शासन कर रहे थे। और अब यह देश अच्छी तरह से चल रहा है क्योंकि यह तुम्हारी इच्छा के अनुसार चल रहा है। मैं तुम सबके दिमाग में बस एक सोच हूँ, और तुम्हारे कामों के अतिरिक्त मेरा कोई अस्तित्व नहीं है। हाकिम

नाम का कोई व्यक्ति नहीं है । केवल शासित जनता है जो स्वयं पर शासन करती है ।"

और नरेश अपने महल में अपने मुकुट एवं राजदण्ड़ के साथ फिर से प्रवेश हुआ । और वृद्ध वृद्धा एवं युवा युवतियाँ अपने भिन्न भिन्न पथों पर चले गए तथा वह संतुष्ट थे ।

और हर कोई व्यक्ति स्वयं को, एक हाथ में ताज तथा दूसरे में राजदण्ड़ लिए हुए सम्राट समझता था ।

रेत पर

एक आदमी ने दूसरे से कहा, “समुद्र में ऊँचे उठे ज्वार-भाटा के समय, बहुत पहले, अपनी लाठी की नोक से मैं ने रेत पर एक पंक्ति लिखी; तथा लोग अब भी उसको पढ़ने के लिए रुकते हैं, और वह इसका ध्यान रखते हैं कि उसे कोई चीज़ मिटा न दे।”

और दूसरे व्यक्ति ने कहा, “और मैंने भी रेत पर एक पंक्ति लिखी, परंतु उस समय ज्वार-भाटा नीचे चला गया था, तथा व्यापक समुद्र की लहरों ने उसे मिटा दिया। परंतु मुझे बताओ कि तुम क्या लिखा?”

तथा पहले व्यक्ति ने उत्तर दिया, “मैंने लिखा, ‘मैं वह हूँ जो हूँ।’ किंतु तुम क्या लिखा?”

एवं दूसरे व्यक्ति ने कहा, “मैंने लिखा, ‘मैं इस महान समुद्र का एक कतरा हूँ।’”

तीन उपहार

एक बार का उल्लेख है कि बेचारे शहर में एक दयालु राजकुमार रहता था जिसे सारी प्रजा का प्यार तथा सम्मान मिलता था ।

परंतु एक अत्यंत दरिद्र व्यक्ति था जिसके हृदय में राजकुमार के प्रति तिक्तता थी, तथा जो उसकी अकीर्ति के लिए समय समय पर आक्रामक भाषा चलाता रहता था ।

राजकुमार को इसका ज्ञान था, फिर भी वह धैर्यवान रहा ।

परंतु अन्ततः उसने इस विषय में विचार किया, और एक शीतकाल की रात में उस व्यक्ति के दरवाजे पर शहज़ादे का एक सेवक आया, जो आटे की एक बोरी, साबुन का एक झोला तथा शक्कर लिए हुए था ।

और सेवक ने कहा, "राजकुमार ने स्मरण के प्रतीक के रूप में आपको यह तीन उपहार भेजे हैं ।"

वह आदमी आनन्दमग्न हुआ, क्योंकि उसने सोचा कि उपहार राजकुमार की ओर से एक सम्मान थे । तथा अपने गर्व की अवस्था में वह धर्माध्यक्ष के पास गया एवं उसे इस बात को व्यक्त करते हुए कि शाहज़ादे ने क्या किया है, बताया, "क्या आप नहीं देखते हैं कि राजकुमार कैसे मेरा सद्भाव चाहता है?"

परंतु बिशप ने कहा, "वाह रे वाह, कितना बुद्धिमान राजकुमार, तथा तुम कितना कम समझते हो । वह

प्रतीक में वार्ता हैं। आटा तुम्हारे खाली पेट के लिए है, साबुन तुम्हारे गंदी त्वचा के लिए, तथा शक्कर तुम्हारी तिक्त जिह्वा को मधुर करने के लिए है।"

उसी दिन से वह आदमी स्वयं अपने आप से भी शरमाने लगा। राजकुमार के प्रति उसकी घृणा और भी अधिक हुई, और उसे भी अधिक वह उस धर्माध्यक्ष से नफरत करने लगा जिसने शाहज़ादे का अभिप्राय उस पर उजागर किया।

परंतु उसके बाद वह चुप रहा।

शांति एवं युद्ध

धूप सेंक रहे तीन कुत्ते आपस में बातचीत कर रहे थे।

पहले कुत्ते ने स्वप्नरत सी अवस्था में कहा, "कुकुर राष्ट्र में इस युग में जीवन पाना यथार्थ में दिव्य अनुग्रह है। विचार कीजिए कि हम कैसी सरलता से समुद्र के नीचे, भूमि पर तथा आकाश में यात्रा करते हैं। तथा कुत्तों के आराम, यहाँ तक कि हमारी नयनों, कर्णों एवं नासिकाओं के लिए किए गए आविश्कारों पर एक क्षण के लिए ध्यान दीजिए।"

फिर दूसरे कुत्ते ने फरमाया, "हम कला पर अधिक ध्यान देने वाले हैं। हम चाँद पर अपने पुरखों की तुलना में अधिक निरंतरता के साथ भोंकते हैं। और जब हम पानी में स्वयं को घूरते हैं तो हम अपने आकार अतीत की तुलना में अधिक स्पष्ट देखते हैं।"

इसके बाद तीसरे कुत्ते ने फरमाया, "परंतु मुझे जो बात अत्यधिक रोचक लगती है तथा जो मेरे मन को आश्चर्यचकित करती है वह कुकुर राष्ट्रों के बीच विद्यमान शांत समझदारी है।"

उसी क्षण उन्होंने देखा, तो वा हैरता ! कुत्तों को पकड़ने वाला प्रकट हुआ।

तीनों कुत्ते उछले तथा गली में भाग निकले; और जब वह दौड़ रहे थे तो तीसरा कुत्ता चलाया, "परमेश्वर के वास्ते, अपने जीवन हेतु भागो। सभ्यता हमारे पीछे पड़ी है।"

नृतयांगना

एक बार बिरकाशा के शाहज़ादे के दरबार में अपने संगीतकारों के साथ एक नृत्यांगना आयी। और उसे राजमहल में उपस्थित किया गया, तथा वह वीणा, बांसुरी एवं सितार के संगीत पर राजकुमार के सामने नाची।

उसने ज्वाला का, तलवार का एवं भालों का नृत्य किया, उसने सितारों एवं अन्तरिक्ष का नृत्य किया। और फिर उसने पवन में पुष्पों का नृत्य किया।

इसके बाद वह राजकुमार के सिंहासन के सामने खड़ी हो गई तथा उसके सामने अपना शरीर झुका लिया। तथा शाहज़ादे ने उसे अधिक समीप आने का आदेश दिया, और उसने उसे कहा, “सुंदर महिला, लालित्य एवं आह्लाद की पुत्री, तुम्हारी कला कहाँ से आती है? तथा तुम अपने आवर्तन एवं अनुप्रास के सभी तत्वों पर कैसे शासन करती हो?”

तब नृत्यांगना पुनः राजकुमार के सामने झुकी, तथा यह जवाब दिया, “शक्तिमान एवं वैभवशाली महाराज ! मुझे आपके प्रश्नों के उत्तरों का ज्ञान नहीं है। मैं केवल इतना जानती हूँ : दार्शनिक की आत्मा का वास उसके सिर में होता है, कवि की आत्मा उसके हृदय में, गायक की आत्मा उसके कण्ठ के आसपास रहती है, परंतु नर्तकी की आत्मा उसके पूरे शरीर में रहती है।”

दो संरक्षक स्वर्गदूत

एक संध्याकाल में दो स्वर्गदूतों की भेंट एक नगर के द्वार पर हुई, एवं उन्होंने एक दूसरे को सलाम किया, तथा बातचीत करने लगे। एक दूत ने कहा, “आप इन दिनों क्या कर रहे हैं, और आपको कौन सा काम सौंपा गया है?”

तब दूसरे ने उत्तर दिया, “मुझे घाटी में रहने वाले एक पतित व्यक्ति का अभिभावकीय दायित्व दिया गया है, एक दुष्ट पापी, सर्वाधिक कुख्यात। निश्चित रूप से यह कार्य अत्यधिक महत्वपूर्ण है, तथा मैं कड़ा परिश्रम करता हूँ।”

पहले दूत ने कहा, “यह तो एक सरल नियुक्ति है। मैं प्रायः पापियों को जानता है, और मैं कई बार उनका निगहबान रहा हूँ। परंतु अब मुझे एक उत्तम सन्त के संरक्षण का दायित्व दिया गया है, जो इधर एक कुटिया में रहता है। और मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि यह एक बेहद जटिल एवं सूक्ष्म कार्य है।”

कहा पहले स्वर्गदूत ने, “यह केवल एक अटकल है। किसी पापी की तुलना में एक सन्त की निगहबानी करना कैसे मुश्किल हो सकता है?”

तब दूसरे ने फिर उत्तर दिया, “मुझे अटकलकार कहना कैसी धृष्टता है ! मैं ने तो केवल सत्य ही बोला है। मेरा मानना है कि अटकलकार तुम ही हो !”

तब दूत तकरार करने लगे और लड़ने लगे, पहले

शब्दों से तथा फिर मुक्कों एवं पंखों से ।

वह इस लड़ाई में व्यस्त ही थे कि एक महादूत आया । और उसने उन्हें रोका एवं कहा, "तुम क्यों लड़ते हो? और यह युद्ध किस विषय में है? क्या तुम्हें यह बोध नहीं कि अभिभावक दूतों का नगर के द्वार पर लड़ना सबसे अनुचित है? मुझे बताओ, तुम्हारा विवाद क्या है?"

तब दोनों स्वर्गदूत तुरंत बोले, हर एक यह दावा कर रहा था कि उसे दिया गया काम ज्यादा कठिन है, तथा यह कि वह अधिक मान्यता का अधिकारी है । महादूत ने अपना सिर हिलाया और अपने आप से कुछ सोचा ।

तब उसने कहा, "मेरे मित्रो, मैं अभी नहीं कह सकता हूँ कि तुम में से कौन सम्मान एवं पुरस्कार का हकदार है । परंतु, चूँकि मुझे यह प्राधिकार प्रदान किया गया है, इसलिए शांति एवं अच्छी निगहदारी के लिए, मैं तुम्हें एक दूसरे का पद दिए देता हूँ, क्योंकि तुम में से हर एक इस बात पर ज़िद करता है कि दूसरे का काम अधिक आसान है । इस लिए अब जाओ तथा अपने काम में खुश रहो ।"

इस तरह से आदेश दिए जाने के पश्चात् स्वर्गदूत अपने अपने रास्ते चले गए । परंतु उनमें से हर एक अतीत के लिए महादूत को गुस्से के साथ देखने लगा । तथा अपने हृदय में प्रत्येक कह रहा था, "हाय रे, यह महादूत ! हर दिन यह हम स्वर्गदूतों के लिए जीवन को कठिनतर एवं उससे भी अधिकतर कठिन बनाते हैं !"

किंतु महादूत वहीं खड़ा रहा, और एक बार पुनः उसने अपने साथ सोचा। और उसने अपने हृदय में कहा, “हमें सचमुच में सावधान रहना तथा अपने निगहबान स्वर्गदूतों पर नज़र रखनी चाहिए।”

मूर्ति

एक समय का उल्लेख है कि पहाड़ियों के बीच एक आदमी रहता था जिसके पास प्राचीन काल के किसी कलाकार की तराशी हुई एक मूर्ति थी। यह उसके दरवाजे पर औंधे मुँह पड़ी हुई थी और वह उसकी परवाह नहीं करता था।

एक दिन उसके घर से शहर के एक ज्ञानवान व्यक्ति का गुज़र हुआ, और मूर्ति को देखकर उसने स्वामी से पूछा कि क्या वह उसे बेचेगा।

मालिक हँस पड़ा तथा बोला, "कृपा कर के ज़रा बताएँ तो इस कुरूप एवं गंदे पत्थर को कौन खरीदना चाहेगा?"

शहर के आदमी ने कहा, "मैं इसके बदले यह चाँदी का सिक्का दूँगा।"

और दूसरा आदमी विस्मित हुआ तथा अत्यधिक प्रसन्न हुआ।

हाथी की पीठ पर रख कर, मूर्ति को नगर में पहुँचाया गया। और कई महीनों के बाद पहाड़ियों वाला आदमी शहर गया, तथा जब वह वहाँ की गलियों से गुज़र रहा था, उसने एक दुकान के सामने एक भीड़ देखी, और एक आदमी तेज आवाज में चिल्ला रहा था, "आइए, आइए ! अंदर आइए, और संसार की सबसे सुन्दर एवं सर्वोच्च प्रतिमा देखिए। एक निपुण कलाकार की इस भव्य कृति को देखने के लिए केवल चाँदी के दो सिक्के।"

अतःपरं पहाड़ियों से आने वाले उस व्यक्ति ने दो चाँदी के सिक्के अदा किए और उस प्रतिमा को देखने के लिए दुकान में घुस गया जिसे स्वयं उसने चाँदी के एक सिक्के के बदले बेचा था।

विनिमय

एक बार एक चौराहे पर एक निर्धन कवि की भेंट एक धनी मूर्ख से हुई, तथा वह संवाद करने लगे। जो कुछ उन्होंने कहा उससे केवल उनके असंतोष का पता चलता था।

तब सड़क के दूत का वहाँ से गुज़र हुआ, एवं उसने अपना हाथ दोनों आदमियों के कंधे पर रख दिया। और यह लो, एक चमत्कार उत्पन्न हुआ : दोनों व्यक्तियों ने अपनी अपनी संपत्ति का विनिमय किया था।

उसके बाद वे अलग हो गए। परंतु अजीब बात यह थी कि कवि ने देखा तो उसने अपने हाथों में सूखी एवं उड़ती रेत के सिवा कुछ नहीं पाया, तथा मूर्ख ने अपनी आँखें बंद कीं और अपने हृदय में उड़ते बादल के सिवा कुछ भी महसूस नहीं किया।

प्यार तथा नफरत

एक महिला ने एक पुरुष से कहा, “मैं तुमसे प्यार करती हूँ।” और पुरुष ने कहा, “मेरे हृदय में तुम्हारे प्यार के योग्य बनने की कामना है।”

और उस स्त्री ने कहा, “तुम मुझे प्यार नहीं करते हो?” और पुरुष ने उसे केवल टकटकी बाँधकर देखा तथा कुछ नहीं कहा।

तब उस स्त्री ने तीव्र स्वर में चिल्ला कर कहा, “मैं तुमसे नफरत करती हूँ।” और तब आदमी ने कहा, “फिर मेरे हृदय में भी तुम्हारी घृणा के योग्य होने की इच्छा है।”

सपने

एक व्यक्ति ने एक स्वप्न देखा, तथा जब वह जागा तो वह अपने निमित्तज्ञ के पास गया तथा यह इच्छा की कि उसके सपने की व्याख्या उसे स्पष्ट की जाए ।

तथा निमित्तज्ञ ने उस आदमी से कहा, “मेरे पास वह स्वप्न लेकर आओ जिन्हें तुम अपनी जागरूकता की अवस्था में देखते हो, एवं मैं तुम्हें इसका अर्थ बता दूँगा । परंतु तुम्हारी नींद के सपनों का संबंध न तो मेरी बुद्धिमता से है और न ही तुम्हारी कल्पना से ।”

पागल व्यक्ति

पागलखाने की पुष्प वाटिका में मेरी भेंट एक युवक से हुई जो पीले चेहरे वाला, मंजु एवं आश्चर्य भरा था । और मैं बेंच पर उसके बगल में बैठ गया । तथा पूछा, "तुम यहाँ क्यों हो?"

तब उसने आश्चर्य से मुझे देखा और बोला, "यह एक अनानुकूल प्रश्न है, फिर भी मैं तुम्हें जवाब दूँगा । मेरे पिता श्री मुझे हूबहू अपने जैसा बनाना चाहते हैं, इसी तरह से मेरे काका श्री भी । मेरी माता श्री मुझे अपने प्रख्यात पिता श्री का प्रतिरूप बनाना चाहती थीं । मेरी बहन मेरे सामने अपने जहाज़ी पति के मार्ग पर चलने का आदर्श उदाहरण बनाकर रखती थीं । मेरे भ्राता श्री चाहते हैं कि मैं उनके समान एक खिलाड़ी बन जाऊँ ।

मेरे शिक्षक सज्जनों, एक दर्शन के विद्यावाचस्पति, एक संगीत विशेषज्ञ, एवं एक तर्कशास्त्री ने भी निश्चय कर रखा था, और उनमें से हर एक यही चाहता था कि मैं दर्पण में उन के ही चेहरे का प्रतिबिंब बन जाऊँ ।

"अतः, मैं इस स्थल में चला आया । मुझे यहाँ अधिक मानसिक संतुलन नज़र आता है । कम से कम मैं यहाँ अपना आप हो सकता हूँ ।"

तब अचानक उसने मेरी ओर देखा एवं पूछा, "परंतु मुझे बताओ, क्या तुम्हें भी इस जगह शिक्षा तथा अच्छे सुझाव के माध्यम से पहुँचाया गया है?"

और मैंने जवाब दिया, "नहीं, मैं एक पर्यटक हूँ ।"

तथा उसने उत्तर दिया, “अच्छा, तो तुम उनमें से एक हो जो दीवार की दूसरी ओर स्थित पागलखाने में रहते हैं।”

मेंढकें

ग्रीष्मकाल के एक दिन एक मेंढक ने अपनी जोरू से कहा, "मुझे डर है कि तट पर इस घर में रहने वाले लोगों को हमारी निशा की टर्र-टर्र से बाधा पहुँचती है।"

तथा उसकी जोरू ने जवाब दिया, "ठीक है, क्या दिन में वे सब हमारी चुप्पी में अपनी बातचीत के द्वारा बाधाकारी नहीं होते हैं?"

मेंढक ने कहा, "हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि हम रात में सम्भवतः अत्यधिक गाते हैं।"

तथा उसकी भार्या ने उत्तर दिया, "हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वे दिन के समय अत्यधिक बकवास करते तथा चिल्लाते हैं।"

मेंढक ने कहा, "इस बड़े मंडूक के संबंध में तुम क्या कहती हो जो अपनी अवैध एवं उच्च ध्वनि से सारी बस्ती को परेशान करता है?"

और उसकी पत्नी ने उत्तर दिया, "हाँ, हाँ, और तुम उस राजनीतिज्ञ, धर्माचार्य एवं वैज्ञानिक के संदर्भ में क्या कहते हो जो इस तट पर आकर हवा को कोलाहल एवं बेसुरी आवाज़ों से भरते हैं?"

तब मेंढक ने कहा, "ठीक है, चलो हम लोगों से अधिक सभ्य हो जाते हैं। चलो हम रात को मौन हो जाते हैं, एवं अपने गानों को अपने दिलों में रखते हैं, यद्यपि इन्दु हमारी ताल एवं नक्षत्र हमारे अनुप्रास की माँग करें।

चलो कम से कम हम एक या दो या तीन रातों के लिए चुप हो जाते हैं ।"

तथा उसकी श्रीमती ने कहा, "बहुत अच्छा, मैं सहमत हूँ । देखते हैं कि तुम्हारा उदार हृदय क्या सामने लाता है ।"

उस रात मेंढक चुप रहे, फिर अगली रात भी चुप रहे, तथा फिर तीसरी रात भी ।

कहने को तो बात अजीब है परंतु सच यह है कि झील की बगल में रहने वाली बातूनी महिला तीसरे दिन नाश्ता करने आई और अपने पति से चिल्ला कर बोली, "मैं इन तीन रातों में सोई नहीं हूँ । जब मेरे कानों में मैंढकों का शोर पड़ता था तो मुझे संतोष से नींद आती थी । परंतु कुछ न कुछ ज़रूर हुआ है । उन्होंने अब तीन रातों से गाया नहीं है; और मैं नींद न आने से लगभग पागल हो गई हूँ ।"

मेंढक ने यह बात सुनी तथा वह अपनी जोरू की ओर मुड़ा एवं अपनी पलकें झपकाते हुए कहा, "और हम मौनता से लगभग विक्षिप्त हो गए थे, है ना?"

और उसकी पत्नी ने जवाब दिया, "हाँ, रात की चुप्पी हम पर भारी था । और अब मैं समझ गई कि जिन लोगों को अपनी अपनी रिक्तता कोलाहल से भरनी ही पड़ती है, उन लोगों के आराम का खयाल रखने के लिए हमें अपने गीत बंद करने की जरूरत नहीं है ।"

और उस रात चाँद ने उन की ताल को, तथा नक्षत्रों ने उन के अनुप्रास को व्यर्थ में ही आमंत्रण न दिया ।

विधि एवं विधान-व्यवस्था

कई युग बीत गए कि एक भव्य सम्राट था, एवं वह बुद्धिमान था। और उसने अपनी प्रजा के लिए कानून बनाने की इच्छा की।

उसने एक हज़ार विभिन्न जनजातियों के एक सहस्त्र बुद्धिमान व्यक्तियों को नियम बनाने के लिए अपने सदन में बुलाया।

और यह कार्य संपन्न हुआ।

परंतु जब चर्म-पत्र पर लिखे हुए हज़ार नियम राजा के सम्मुख प्रस्तुत किए गए, और उसने उनका अध्ययन किया, तो वह आभ्यन्तर फूट फूट कर अश्रुरत हुआ, क्योंकि उसे ज्ञात नहीं था कि उसके देश में एक सहस्त्र प्रकार के अपराध हो रहे हैं।

तब उसने अपने शुभ-लेखक को बुलाया तथा होंठों पर खिली मुस्कान के साथ, स्वयं निर्माण किए हुए नियमों का लेखन कराया। और उसके कानून केवल सात थे।

और एक हज़ार बुद्धिमान गुस्से में चूर होकर उसे छोड़ गए तथा वह अपने बनाए हुए नियमों के साथ अपने अपने कबीलों में लौट गए। और हर कबीला अपने ही बुद्धिमान के नियमों का पालन करने लगा।

अतः अब तक भी उनके एक हज़ार कानून हैं।

यह एक भव्य देश है परंतु यहाँ एक हज़ार कारागार हैं और बन्दीगृह महिलाओं, पुरुषों एवं एक हज़ार कानून

तोड़ने वालों से भरे रहते हैं।

यह वास्तव में एक वैभवशाली देश है परंतु इसके लोग एक हज़ार नियम-निर्माताओं तथा केवल एक बुद्धिमान राजा की सन्तति हैं।

कल, आज और कल

मैंने अपने मित्र से कहा, “आज तुम उसे उस आदमी की बाँहों में सिर रखे देख रहे हो। यह कल ही की बात है कि उसका सिर इसी तरह मेरी बाँहों में था।”

तब मेरे मित्र ने कहा, “और कल वह मेरी बाँहों में होगी।”

मैंने कहा, “देखो तो, वह उस व्यक्ति के कितनी निकट बैठी है। यह कल ही की बात है कि वह मेरे समीप थी।”

तथा उसने उत्तर दिया, “कल वह मेरी निकटता में होगी।”

मैंने कहा, “देखो, वह उस के चषक से द्राक्षासव पी रही है, वा हैरता! कल वह मेरे पैमाने से पीती थी।”

और वह बोला, “कल वह मेरे पैमाने से पी लेगी।”

तब मैंने कहा, “देखो वह प्रीति एवं समर्पण भरी नयनों से उसे कैसे एकटक देख रही है। कल ही वह उसी भाव से मुझे टकटकी बाँध कर देख रही थी।”

और मेरे मित्र ने कहा, “कल मैं हूँगा जिसे वह ऐसे ही देखेगी।”

मैंने पूछा, “क्या तुम उसे इस समय उसके कानों में प्रीति गान सरसराते हुए नहीं सुन रहे हो? यही प्रीति गान वह कल मेरे कानों में धीमी आवाज़ में गाती थी।”

और मेरे मित्र ने कहा, “और कल वह इन गीतों को मेरे कानों में गुनगुनाएगी।”

मैंने कहा, "यह क्या हुआ कि वह उसे आलिंगन कर रही है? कल ही वह मुझे गले लगा रही थी।"

और मेरे मित्र ने कहा, "कल वह मुझसे अंग भरेगी।"

तब मैं ने कहा, "कितनी आश्चर्यजनक महिला !"

किंतु उसने उत्तर दिया, "वह ज़िन्दगी के समान है, जो हर किसी व्यक्ति की होती है; और वह मृत्यु के समान है, जो सभी मनुष्यों पर विजय पाती है, एवं वह सनातनत्व के समान है, जो सभी लोगों को घेर लेती है।"

दार्शनिक तथा मोची

मोची की दुकान पर फटे पुराने जूते लिए एक दार्शनिक आया। और दार्शनिक ने मोची से कहा, “मेरे जूतों की मरम्मत कीजिए।”

और मोची ने कहा, “अभी मैं अन्य व्यक्तियों के जूतों की मरम्मत कर रहा हूँ, और आपके जूतों से पहले मुझे कुछ और जूतों की मरम्मत करनी है। परंतु आप अपने जूते यहाँ छोड़ दें, तथा आज जूतों के इस जोड़े को पहन लें, और कल अपने जूते लेने आ जाएँ।”

तब दार्शनिक ने उस पर नाक भौं चढ़ाया, और उसने कहा, “जो जूते मेरे अपने नहीं हैं मैं उन्हें नहीं पहनता हूँ।”

और मोची ने कहा, “तब ठीक है, क्या आप सचमुच में एक दार्शनिक हैं, और अपने पैरों को दूसरों के जूतों में नहीं डाल सकते हैं? इसी गली में एक दूसरा चर्मकार जो मुझसे बेहतर ढंग से दार्शनिकों को समझता है। आप मरम्मत कराने उसके पास चले जाएँ।”

सेतुओं के वास्तुकार

एनिटोच में उस स्थान पर जहाँ से एसि सरिता सागर से मिलने जाती है, शहर के अर्ध भाग को दूसरे आधे हिस्से से मिलाने के लिए एक पुल का निर्माण किया गया। इसका निर्माण बड़े बड़े पत्थरों से हुआ था जिन्हें एनिटोच के खच्चरों के माध्यम से पहाड़ों के बीच से ढो कर लाया गया था।

जब पुल का निर्माण पूरा हो गया, तो उसके एक स्तंभ पर यूनानी तथा आरामी भाषाओं में उत्कीर्ण किया गया, "इस पुल का निर्माण राजा एनिटोचस द्वितीय द्वारा किया गया था।"

और सभी लोग बड़ी नदी एसि पर बने इस अच्छे पुल से होकर गुज़रते।

परंतु एक साँझ लोगों की दृष्टि में कुछ पागल लगने वाला युवा उस स्तंभ के पास वहाँ पहुँचा जहाँ शब्द उत्कार्ण गए थे, तथा उसने उत्कीर्ण पाठ को लकड़ी के कोयले से ढक दिया और उसके ऊपर लिख दिया, "इस पुल के पत्थर पहाड़ों से खच्चरों के माध्यम से लाये गये थे। इसके ऊपर आते जाते समय तुम एनिटोच के खच्चरों की पीठ पर सवार होते हो, जो इस पुल के वास्तुकार हैं।"

और जब लोगों ने युवक की लिखी हुई बात पढ़ी, तो उनमें से कुछ तो हँसे जबकि कुछ आश्चर्य में पड़ गए।

और कुछ लोगों ने कहा, "अरे हाँ, हमें ज्ञान है कि यह

किसने किया है। क्या वह थोड़ा सा पागल नहीं है?"

परंतु एक खच्चर ने दूसरे खच्चर से हँसते हुए कहा, "क्या तुम्हें याद नहीं है कि हम ही ने इन पत्थरों को ढोया था? फिर भी अभी तक यही कहा जाता रहा है कि पुल का निर्माण राजा एनिटोचस द्वारा किया गया था।"

ज़ाद का मैदान

ज़ाद की सड़क पर एक यात्री पास के गाँव में रहने वाले एक आदमी से मिला, तथा यात्री ने अपने हाथ से एक विशाल मैदान की ओर इशारा करके उस आदमी से पूछा, "क्या यह वही युद्धक्षेत्र नहीं है जहाँ अहलाम राजा अपने दुश्मनों पर प्रबल हुआ था?"

तथा उस व्यक्ति ने यह कह कर जवाब दिया, "यह कभी भी रणभूमि नहीं रहा है। इस मैदान की जगह कभी ज़ाद का महान नगर खड़ा था, तथा उसे जला कर भस्म कर दिया गया। परंतु अब यह अच्छा मैदान है, है ना ?"

तथा यात्री एवं आदमी अलग हो गए।

आधा मील से कम दूरी के बाद ही यात्री एक दूसरे व्यक्ति से मिला, तथा फिर मैदान की ओर इशारा करते हुए कहा, "तो यही वह जगह है जहाँ ज़ाद का महान शहर कभी खड़ा था?" तथा आदमी ने कहा, "इस जगह कभी कोई शहर नहीं था। परंतु कभी यहाँ पर एक मठ था, एवं दक्षिण देश के लोगों ने उसे ध्वस्त कर दिया।"

इसके थोड़ी देर बाद, ज़ाद की उसी सड़क पर, यात्री की मुलाकात एक तीसरे व्यक्ति से हुई, तथा विस्तृत मैदान की ओर एक बार फिर संकेत करते हुए उसने पूछा, "क्या यह सच नहीं है कि यही वह स्थान है जहाँ कभी एक महान मठ हुआ करता था?"

परंतु आदमी ने जवाब दिया, "इस इलाके के पड़ोस

में कभी भी कोई मठ नहीं था, परंतु हमारे माता पिता तथा पुरखों ने हमें बताया है कि एक बार इस धरती पर एक बड़ा उल्का गिरा था।"

तब यात्री आगे बढ़ा, वह आभ्यन्तर आश्चर्यचकित था। तथा तब वह एक बहुत बूढ़े व्यक्ति से मिला, और सलाम करते हुए उसने कहा, "मियाँ, मैं इस सड़क के पड़ोस में रहने वाले तीन लोगों से मिला हूँ तथा उनमें से प्रत्येक से इस भूमि के विषय में पूछा, तथा हर एक ने दूसरे की कही हुई बात से इनकार किया, एवं हर एक ने मुझे एक नई कहानी बताई जिसे दूसरे ने नहीं बताया था।"

तब वृद्ध व्यक्ति ने अपना सिर उठाया और कहा, "मेरे मित्र, उनमें से हर एक व्यक्ति ने आपको वह बताया जो वास्तव में हुआ था, परंतु हम में से कुछ लोग ही एक वास्तविकता में अन्य तथ्य जोड़कर एक पूर्ण सत्य बनाने के योग्य हैं।"

स्वर्णिम कमरबन्द

एक दिन की बात है कि मीनारों के नगर, सलामीज़ की ओर जा रहे दो पथिक सड़क पर मिले। मध्याह्न के समय वह एक चौड़ी नदी पर पहुँचे तथा उसे पार करने के लिए कोई पुल नहीं था। उनके लिए या तो तैर कर जाना अथवा किसी अन्य अपरिचित सड़क को ढूँढना आवश्यक हो गया।

तथा उन्होंने एक दूसरे से कहा, "हमें तैरना चाहिए। बहरहाल, नदी इतनी चौड़ी नहीं है।" और उन्होंने स्वयं को पानी में डालकर तैरना शुरू कर दिया।

और उनमें से एक, जो हमेशा से नदियों एवं नदियों के रास्तों से परिचित था, वह अपने पर बीच धारा में अचानक नियंत्रण खोने लगा, और तेज़ी से पानी द्वारा बहाया जाने लगा, जबकि दूसरा, जो इससे पहले कभी नहीं तैरा था उसने सीधे नदी पार कर ली एवं दूसरे किनारे पर जाकर खड़ा हो गया। फिर अपने सहयात्री को धारा से जूझता हुआ देखकर उसने स्वयं को फिर से पानी में डाल दिया और उसे भी किनारे पर सुरक्षित ले आया।

तब जो व्यक्ति धारा में बहा जा रहा था, उसने पूछा, "परंतु तुमने मुझे बताया था कि तुम तैर नहीं सकते; फिर तुमने वह नदी इतने विश्वास के साथ कैसे पार कर ली?"

तथा दूसरे आदमी ने जवाब दिया, "मेरे मित्र, क्या

तुम इस कमरबन्द को देखते हो, जो मुझे घेरे हुए है? यह स्वर्णिम सिक्कों से भरा है, जिन्हें मैंने एक पूर्ण वर्ष काम करके अपनी पत्नी तथा बच्चों के लिए कमाया है। यह सोने के इस बेल्ट का भार है जो मुझे नदी पार मेरी पत्नी तथा मेरे बच्चों के पास ले आया। और जब मैं तैर रहा था तो मेरी पत्नी एवं मेरे बच्चे मेरे कंधों पर थे।"

और दोनों आदमी साथ साथ सलामीज़ की ओर चल पड़े।

लाल मिट्टी

एक वृक्ष ने एक आदमी से कहा, “मेरी जड़ें गहरी लाल मिट्टी में हैं, तथा मेरे फल से मैं तुम्हें दे दूँगा।”

तब आदमी ने वृक्ष से कहा, “हम कितने समान हैं। मेरी जड़ें भी गहरी लाल मिट्टी में हैं। और लाल भूमि तुम्हें अपना फल मुझे देने की शक्ति प्रदान करता है, एवं लाल मिट्टी मुझे तुम से कृतज्ञता के साथ प्राप्त करना सिखाता है।”

पूर्ण चन्द्र

चौदहवीं का चाँद शहर में शान के साथ उदयमान हुआ, और नगर के सारे कुत्ते उस पर भौंकने लगे।

एक मात्र कुत्ता नहीं भौंका, तथा उसने एक गंभीर स्वर में उनसे कहा, "नीरवता को उसकी नींद से मत जगाओ, और अपने भौंकने से चंद्रमा को पृथ्वी पर मत उतारो।"

तब सभी कुत्तों ने भौंकना बंद कर दिया, एवं पूर्ण मौनता छा गयी। परंतु जिस कुत्ते ने उन्हें चेतावनी दी थी, वह उसके बाद रात भर उन्हें "चुप हो जाओ", "चुप हो जाओ" कहते कहते भौंकता रहा।

एकान्तवासी ईश्वरदूत

एक यूग की बात है कि एक एकान्तवासी ईश्वरदूत नश्वर संसार में रहा करता था, तथा महीने में तीन बार वह महान शहर को जाया करता था और बाज़ार में लोगों को सहायता एवं आपसी सहभाजन के प्रवचन देता था। और वह सुवक्ता था, एवं उसकी प्रतिष्ठा पूरे क्षेत्र में थी।

एक शाम तीन लोग उसकी झोंपड़ी में आए तथा उसने उनका स्वागत किया। और उन्होंने कहा, “आप सहायता तथा आपसी सहभाजन का प्रचार करते रहे हैं, और आप ने धनी लोगों को दीनहीन की सहायता करने के शिक्षा दी है, और हमें इस बात में कोई संदेह नहीं है कि आपकी प्रतिष्ठा ने आप को माल व दौलत प्रदान की है। अब ज़रा हमें अपनी संपत्ति से सहायता कीजिए, क्योंकि हम जरूरतमंद हैं।”

तथा एकान्तवासी ने उत्तर दिया, “मेरे मित्रो, मेरे पास इस बिस्तर, इस चटाई तथा पानी की इस सुराही के सिवा अन्य कुछ नहीं है। यदि आपका हृदय चाहे तो उन्हें ले लो। मेरे पास न तो सोना है न ही चाँदी।”

तब उन्होंने उसे तिरस्कार से देखा तथा अपने चेहरे उस से फेर लिए, और अंतिम आदमी एक क्षण के लिए दरवाजे पर खड़ा हुआ, और कहा, “अरे धोखेबाज ! अरे कपटी ! तुम ऐसी बातों का प्रवचन एवं प्रचार करते हो जिन्हें तुम स्वयं व्यवहार में नहीं लाते।”

प्राचीन, दीर्घकालिक मदिरा

एक बार का उल्लेख है कि एक धनी व्यक्ति कहीं रहता था। और वह अपने तहखाने एवं उसके अंदर रखी मदिरा पर यथोचित रूप में गौरवित था। और एक सुराही पुरानी शराब की थी जो उसने किसी ऐसे अवसर के लिए रखी हुई थी जिसका ज्ञान केवल उसे ही था।

राज्य का प्रशासक उससे मिलने आया, परंतु उसने स्वयं से विचार किया, "इस सुराही को केवल एक प्रशासक के लिए नहीं खोला जाएगा।"

फिर उस क्षेत्र का धर्माध्यक्ष उससे मिलने आया, परंतु उसने अपने आप से कहा, "नहीं, मैं इस सुराही को कदापि नहीं खोलूँगा। उसे न इस का महत्त्व मालूम होगा, न ही उसकी सुगंध उसकी नाक तक पहुँचेगी।"

देश का राजकुमार उसके घर आया तथा उसने उसके साथ रात का भोजन ग्रहण किया। परंतु उसने सोचा, "यह शराब तो ऐसी भव्य चीज है कि यह एक छोटे से राजकुमार के लायक है ही नहीं।"

तथा जब उसके भतीजे की शादी हुई, उस दिन भी उसने स्वयं से कहा, "नहीं, इन मेहमानों के सामने इस सुराही को नहीं लाया जाएगा।"

एवं वर्ष बीतते गए, तथा वह बूढ़ा होकर मृत्यु को प्राप्त हो गया, और उसे हर किसी बीज एवं बंजुफल की तरह दफनाया गया।

और जिस दिन उसे दफनाया गया, वह प्राचीन सुराही शराब की अन्य सुराहियों के साथ बाहर निकाली गई, तथा उसे पड़ोस के किसानों ने मिलजुल कर पी लिया । और किसी को भी उसकी दीर्घकालिक महानता के सन्दर्भ में कुछ ज्ञात न हुआ ।

उनके लिए प्याले में जो कुछ भी ढ़ाला जाए, वह केवल मदिरा है ।

दो कवितायें

कई शताब्दियाँ पूर्व, एथिन्ज़ की सड़क पर, दो कवियों की मुलाकात हुई, और वे एक दूसरे से मिलकर बहुत खुश हुए।

तथा एक कवि ने दूसरे से यह कहते हुए सवाल किया, "आप ने हाल ही में क्या सृजन किया है, तथा उसका वीणा के साथ कैसा संगम रहा?"

तथा दूसरे कवि ने गर्व के साथ जवाब दिया और कहा, "मैं ने अभी अपनी सबसे महान कविता पूरा की है, जो शायद यूनानी में अब तक की सबसे महान कविता हो सकती है। यह स्वर्ग के सिंहासन के सर्वोच्च देवता, ज़युवस, से प्रार्थना है।"

तब उसने अपने पोशाक के नीचे से चर्म-पत्र यह कहते हुए निकाला, "यह लो, देखो, यह मेरे पास है, तथा मैं खुशी से यह तुम्हें सुनावों गा। आओ, हम सर्व की छाया में चल कर बैठें।"

तथा कवि ने अपनी कविता पढ़ी। और वह एक लंबी रचना थी।

तथा दूसरे कवि ने सभ्य तरीके से कहा, "यह एक महान कविता है। यह संसार में जीवित रहेगा, तथा इस कारण आप को महानता प्राप्त होगी।"

फिर प्रथम कवि ने शांति के साथ कहा, "और तुम इन दिनों क्या कुछ लिख रहे हो?"

तथा दूसरे ने कहा, "मैं ने केवल एक ही लिखी है।

केवल आठ पंक्तियाँ, जो बगीचे में खेल रहे एक बालक की याद में हैं।" और उसने वह पंक्तियाँ पढ़ीं।

पहले कवि ने कहा, "बुरी नहीं है, बुरी नहीं है।"

और वह अपने अपने पथ पर चले गए।

और अब, दो हज़ार वर्ष पश्चात्, उस एक कवि की आठ पंक्तियाँ हर भाषा में पढ़ी जा रही हैं, तथा उन्हें मुहब्बत किया जाता है, एवं उन्हें सिर आँखों पर रखा जाता है।

और यद्यपि दूसरी कविता निस्संदेह ज़माने से पुस्तकालयों तथा विद्वानों की कोठरियों में रही है, तथा यद्यपि उसका स्मरण किया जाता है; परंतु उसे न प्यार दिया जाता है और न ही उसे पढ़ा जाता है।

श्रीमती रुथ

तीन आदमियों ने दूर से एक बार हरी भरी पहाड़ी पर खड़े एक सफेद मकान को देखा। उनमें से एक ने कहा, “वह श्रीमती रुथ का मकान है। वह एक बूढ़ी चुड़ैल है।”

दूसरे आदमी ने कहा, “तुम गलत हो। श्रीमती रुथ एक सुन्दर महिला है जो वहाँ पर अपने प्रतिष्ठित सपनों हेतु रहती है।”

तीसरे आदमी ने कहा, “तुम दोनों गलत हो। श्रीमती रुथ इस विशाल भूमि पर काबिज है तथा वह अपने कृषि-दासों का खून चूसती है।”

और वह श्रीमती रुथ पर चर्चा करते रहे।

फिर जब वह एक चौराहे पर आए, तो उनकी मुलाकात एक बूढ़े आदमी से हुई, और उनमें से एक ने उससे पूछा, “क्या आप कृपया हमें श्रीमती रुथ के बारे में बतलाएँगे, जो इस पहाड़ी पर इस सफेद मकान में रहती है?”

तथा बूढ़े व्यक्ति ने अपना सिर उठाया और उन पर मुस्कुरा कर कहा, “मैं नब्बे वर्षों का हूँ, तथा मैं श्रीमती रुथ को उस समय जानता था जब मैं एक छोटा सा बालक था। परंतु श्रीमती रुथ अस्सी वर्ष पहले मर गईं, और वह मकान अब खाली है। कभी कभार इस में उल्लू सीटियाँ बजाते हैं, और लोग कहते हैं कि यह जगह भूतग्रस्त है।”

चूहा तथा बिल्ली

एक शाम एक कवि की भेंट एक कृषक से हुई। कवि ध्यानहीन एवं कृषक लज्जालु था, फिर भी उन्होंने संवाद किया।

तथा किसान ने कहा, "चलिए मैं आपको एक छोटी सी कथा सुनाता हूँ, जो मैंने हाल ही में सुनी है।

एक चूहा चूहेदानी में फँस गया, तथा जब वह उसके अंदर रखी गई पनीर खुशी से खा रहा था, एक बिल्ली पास आकर खड़ी हो गई। चूहा थोड़ी देर थरथराया, परंतु उसे मालूम था कि वह चूहेदानी के भीतर सुरक्षित है।

"तब बिल्ली ने कहा, 'मेरे मित्र, तुम अपना अंतिम भोजन खा रहे हो।'

"'हाँ,' चूहे ने उत्तर दिया, 'एक जीवन है मेरे पास, इसलिए एक ही मौत। परंतु कुछ अपनी भी सुनावो? लोग कहते हैं कि तुम्हारी नौ ज़िन्दगियाँ है। क्या इसका मतलब यही है कि तुम्हें नौ बार मरना पड़े होगा?'"

फिर कृषक ने कवि की ओर देखा और कहा, "क्या यह एक विचित्र कथा नहीं है?"

और कवि ने उसे उत्तर नहीं दिया, परंतु वह अपने आभ्यंतर यह कहते हुए चला गया, "सही बात तो यह है कि नौ जीवन हमारे पास हैं, निस्संदेह नौ जीवन। तथा हम नौ बार मरेंगे, नौ बार हमारा निधन होगा। शायद केवल एक ही ज़िन्दगी उच्चतर होती, जो पिंजरे में फँस

जाती—एक किसान की इहलीला, अंतिम भोजन के लिए थोड़ा सी पनीर के साथ । मगर फिर भी हम रेगिस्तान और जंगल के शेरों के रिश्तेदार नहीं हैं ।”

श्राप

समुद्र के एक बूढ़े आदमी ने एक बार मुझसे कहा, "कोई तीस साल पहले की बात है कि एक जहाज़ी मेरी बेटी को लेकर भाग गया। और मैंने उन दोनों को अपने हृदय में श्राप दिया, क्योंकि सारी दुनिया में मैं केवल अपनी बेटी से प्यार करता था।

"उसके बाद अधिक समय नहीं बीता कि युवा नाविक नाव सहित समुद्र की तह में ड़ूब गया, तथा उसके साथ मेरी प्यारी पुत्री भी मुझसे खो गई।

"अब मेरे अंदर एक जवान तथा एक किशोरी का हत्यारा देखो। मेरे शाप ने उन्हें बर्बाद किया। और अब मैं श्मशान के निकट पहुँचते पहुँचते प्रभु से क्षमा चाहता हूँ।"

यह वृद्ध व्यक्ति ने कही। परंतु उस की बात के लहजे में कुछ शेख़ी थी, और ऐसा लगता है कि वह अब भी अपने शाप की शक्ति पर घमण्ड करता है।

अनार

एक यग में एक व्यक्ति था जिसके उद्यान में अनार के कई पेड़ थे। और कई शरद्ऋतुओं में वह अपने अनारों को चाँदी की तश्तरियों में अपने निवास के बाहर रख देता था, तथा तश्तरयों पर वह स्वयं अपने हाथों से लिखा हुआ निर्देश लगा देता, “एक अनार मुफ्त ले जाएँ। आपका स्वागत है।”

परंतु लोग प्रस्थान होते किंतु कोई भी फल नहीं लेता था।

तब उस व्यक्ति ने अपने आप से विचार किया, तथा एक शरद्ऋतु में उसने अपने निवास के बाहर चाँदी की तश्तरियों पर कोई अनार नहीं रखा, परंतु यह निर्देश विशाल अक्षरों में लिख कर रखा :

“हमारे पास भूमि के सर्वश्रेष्ठ अनार हैं, परंतु हम उन्हें किन्ही अन्य अनारों की तुलना में अधिक चाँदी के बदले विक्रय करते हैं।”

तो लो देखो, पड़ोस के सभी पुरुष एवं महिलायें क्रय करने हेतु दौड़ते हुए आए।

परमेश्वर तथा कई ईश्वर

कलाफेस के नगर में मन्दिर की सीढ़ियों पर एक दार्शनिक खड़े होकर कई ईश्वरों का प्रचार करता था।

और जनसाधारण अपने हृदय में कहते थे, “हम यह सब जानते हैं। क्या वे हमारे साथ नहीं रहते हैं तथा हम जहाँ जहाँ जाते हैं क्या वे हमारे पीछे पीछे नहीं आते हैं?”

इसके पश्चात् अधिक दिन नहीं बीते, एक दूसरा व्यक्ति बीच बाज़ार में खड़ा हुआ तथा लोगों से संबोधन कर के कहा, “कोई परमेश्वर नहीं है।” और उसकी बात सुनने वाले बहुत से लोग इस संदेश से हर्षित हुए क्योंकि उन्हें देवताओं का भय था।

फिर अक अन्य दिन में एक विशाल वाग्मिता वाला व्यक्ति आया एवं उसने कहा, “केवल एक ही परमेश्वर है।” और अब लोग भयभीत हो गए क्योंकि अपने दिलों में कई सारे देवताओं की तुलना में एक परमेश्वर के फैसले से वे अधिक ड़रते थे।

उसी मौसम में एक अन्य व्यक्ति प्रकट हुआ तथा उसने जनमानस से संबोधन किया, “तीन परमेश्वर हैं, तथा वह हवा पर एक होकर बसेरा करते हैं, और उनके पास प्रशस्त एवं दयालु माँ हैं जो उनकी भार्या एवं भगिनी भी है।”

तब प्रत्येक को चैन मिला, क्योंकि उन्होंने अपने आभ्यंतर में कहा, “एक में तीन ईश्वर अवश्य ही हमारी

विफलताओं पर मतभेद करेंगे, तथा इसके अतिरिक्त, उनकी दयालु माता श्री निश्चित रूप से हम बेचारे निर्बलों की अधिवक्ता बनेंगीं।”

इसके बावजूद आज तक भी कलाफेस शहर में ऐसे लोग हैं जो बहुत सारे परमेश्वर तथा कोई परमेश्वर नहीं, तथा एक परमेश्वर तथा तीन में एक परमेश्वर, तथा परमेश्वरवों की एक दयालु माता के विषय में एक दूसरे से वादविवाद एवं तू-तू मैं-मैं करते हैं।

वह, जो बहरी थी

एक बार का उल्लेख है कि एक धनी व्यक्ति कहीं रहता था जिसकी एक पत्नी थी, तथा वह पूरी तरह बहरी थी ।

और एक सुबह जब वह नाश्ता कर रहे थे, वह उससे बोली, "कल मैं बाज़ार गई थी, तथा वहाँ दमिश्क के रेशमी कपड़ों, भारत के दुपट्टों, ईरान के हारों तथा यमन के कड़ों की प्रदर्शनी लगी हुई थी । ऐसा लगता है कि काफिलों ने इन सारी चीज़ों को हमारे शहर में अभी अभी लाया है । और अब मुझे देखो, चिथड़ों में, फिर भी एक अमीर आदमी की पत्नी । मैं उनमें से कुछ सुंदर चीज़ें लाना चाहती हूँ ।"

अपनी सुबह की कॉफी में तब तक व्यस्त पति ने कहा, "प्रिये, कोई कारण नहीं है कि तुम गली में जाकर अपनी मनपसंद चीज़ें न खरीदो ।"

और बहरी पत्नी ने कहा, "'नहीं !' तुम हमेशा कहते हैं, 'नहीं, नहीं ।' तुम्हारी संपत्ति तथा अपने लोगों को लजित करने वाले चिथड़ों में मेरा हमारे मित्रों के बीच उपस्थित होना आवश्यक है क्या?"

और पति ने कहा, "मैं ने 'नहीं' नहीं कहा । तुम बाज़ार स्वतंत्रता के साथ जा सकती हो तथा हमारे शहर में आए सब से सुंदर कपड़े एवं गहने खरीद सकती हो ।"

परंतु पत्नी ने उसके शब्दों को फिर से गलत समझा तथा उसने जवाब दिया, "सभी अमीर लोगों में तुम

सबसे कंजूस हो। तुम मुझे सौंदर्य तथा आकर्षण की हर वस्तु का इनकार करते हो, जबकि मेरी उम्र की अन्य महिलाएँ शहर के बागों में आकर्षक परिधानों में घूमती फिरतीं हैं।"

तब वह रोने लगी। और जैसे ही आँसू उसके सीने पर गिरे वह फिर चिल्लायी, "जब भी मैं किसी वस्त्र अथवा भूषण की इच्छा करती हूँ तो तुम मुझसे सदैव कहते हैं, 'नहीं, नहीं।'"

तब पति भी भावुक हुआ, और वह खड़ा हुआ एवं अपने बटुए से मुट्ठी भर स्वर्ण मुद्रा निकाली तथा उसके सामने कोमल स्वर में कहते हुए रखी, "बाज़ार जाओ, मेरी प्यारी, और जो तुम चाहो खरीद लो।"

उस दिन के बाद से बहरी युवा महिला को जब कभी किसी चीज़ की इच्छा होती, अपने पति के सामने अपनी नयनों में एक मोती सा अश्रु लिए प्रकट होती, तथा वह खामोशी के साथ एक मुट्ठी भर सोना निकाल कर उसकी गोद में रख देता।

फिर एक घटना हुई और युवा महिला एक ऐसे युवक की प्रीति में गिरफ्तार हो गई जिसकी आदत लंबी यात्राओं पर जाना था। और जब कभी भी वह दूरस्थ स्थानों में चला जाता, वह अपने स्त्रीगृह में बैठ कर रोती।

जब उसका पति उसे वैसे अश्रुपात करते हुए पाता, वह अपने मन में कहता, "हो न हो कोई नया काफिला, कुछ रेशमी कपड़े तथा गली में नए जवाहरात लिए,

आया होगा।”

और वह मुष्टि भर स्वर्ण मुद्राएँ निकालता तथा उसके सामने डाल देता।

तलाश

एक हज़ार वर्ष पहले की बात है कि दो दार्शनिक लेबनान की एक ढलान पर मिले, तथा एक ने दूसरे से पूछा, “तुम कहाँ जा रहे हो?”

और दूसरे ने जवाब दिया, “मैं जवानी के फव्वारे की तलाश कर रहा हूँ जिसके बारे में मुझे ज्ञात है कि इन पहाड़ियों के बीच निकलकर प्रवारत होता है। मैंने वह रचनायें पाई हैं जो अंशुमाली की ओर बुलंद होने वाले इस फ़व्वारे के सन्दर्भ में बतातीं हैं। और तुम, तुम्हें किस चीज़ की तलाश है?”

पहले व्यक्ति ने उत्तर दिया, “मैं मृत्यु के रहस्य की खोज कर रहा हूँ।”

तब दोनों दार्शनिकों में से प्रत्येक ने यह कल्पना जमा ली कि दूसरे के पास अपने महान विज्ञान की कमी है, तथा वह तू-तू मैं-मैं करने लगे, एवं उन्होंने एक दूसरे पर आध्यात्मिक अंधेपन का आरोप लगाया।

तब जबकि दोनों दार्शनिक ज़ोर ज़ोर से विवाद कर रहे थे, एक अजनबी, एक ऐसा अपरिचित व्यक्ति, जो अपने स्वयं के गाँव में मूर्ख माना जाता था, वहाँ से गुज़रा, तथा जब उसने दोनों को ऊष्ण तर्क-वतर्क करते सुना, वह थोड़ी देर के लिए खड़ा हो गया तथा उनकी बहस को सुनने लगा।

फिर वह उनके पास आया और कहा, “मेरे सज्जनो, ऐसा लगता है कि तुम दोनों वास्तव में दर्शन की एक

ही पाठशाला से संबंधित हो, एवं तुम एक ही वस्तु के विषय में संवाद कर रहे हो, तुम मात्र अलग शब्दों में बात करते हो। तुम में से एक यौवन का फव्वारा खोज रहा है, तथा दूसरे को मृत्यु के रहस्य की तलाश है। फिर भी सचमुच में वे एक ही हैं, तथा वे तुम दोनों में एक बनकर रहते हैं।"

तब अजनबी यह कहते हुए मुड़ गया, "नमस्कार, बुद्धिमानो।" और जैसे वह चला, उसने एक धैर्यशील हँसी हँसी।

दोनों दार्शनिक एक क्षण के लिए एक दूसरे का अवलोकन करते रहे, और तब वे भी हँस पड़े। तथा उनमें एक ने कहा, "तो अब क्या हमें संग संग चलना तथा खोज करना नहीं चाहिए?"

राजदण्ड़

एक सम्राट अपनी पत्नी से मुखातिब हुआ, “मैडम, तुम वास्तव में एक महारानी नहीं हो । तुम इतनी अभद्र एवं असभ्य हो कि तुम मेरी पत्नी होने के योग्य नहीं हो ।”

उसकी पत्नी ने जवाब दिया, “श्रीमान्, तुम स्वयं को सम्राट समझते हो, परंतु वास्तविक में तुम केवल एक कमज़ोर आवाज हो ।”

तो इन शब्दों ने सम्राट को गुस्सा दिलाया, तथा उसने अपने हाथ से अपना स्वर्णिम राजदण्ड़ उठाया, और महारानी के ललाट पर दे मारा ।

तथा उसी क्षण राज-प्रबन्धक प्रवेश हुआ तथा उसने अनुरोद कियो, “महाराज ! श्रीश्री ! इस राजदण्ड़ को इस भूमि के सबसे महान कलाकार ने बनाया था । अफसोस ! किसी दिन आप तथा महारानी विस्मृति में चले जाएँगे, परंतु इस राजदण्ड़ को पीढ़ी दर पीढ़ी एक सुंदर वस्तु की तरह सुरक्षित रखा जाएगा । तथा अब जब आपने महारानी के सिर से खून निकाल लिया है, महाराज, इस राजदण्ड़ पर और अधिक ध्यान दिया जाएगा तथा इसे अधिक यादगार बनाया जाएगा ।”

रास्ता

पहाड़ियों के बीच एक महिला एवं उसका पुत्र रहते थे, तथा वह उसकी पहली एवं अंतिम संतान थी ।

और वह बालक बुखार से निधन कर गया जबकि चिकित्सक समीप ही खड़ा था ।

और चिकित्सक ने कहा, “यह बुखार था ।”

और माँ ने पूछा, “बुखार क्या होता है?”

तथा डॉक्टर ने उत्तर दिया, “मैं इसकी व्याख्या नहीं कर सकता हूँ । यह ऐसी चीज़ है जो अत्यधिक सूक्ष्म है, जो शरीर में आती है, तथा हम इसे मानव-आँखों से नहीं देख सकते हैं ।”

इसके बाद डॉक्टर उसे छोड़कर चला गया । तथा वह स्वयं से दोहराती रही, “कोई ऐसी चीज़ है जो अत्यधिक सूक्ष्म है । हम इसे मानव-आँख से नहीं देख सकते हैं ।”

तथा संध्या के समय पादरी उसे सांत्वना देने आया । एवं वह रोने लगी और उसने चिल्लाकर कहा, “अरे, मैंने अपना बेटा क्यों खोया, मेरा एकमात्र बेटा, मेरा पहला पैदा होने वाला पुत्र?”

और पादरी ने कहा, “मेरे बच्चे, यह परमेश्वर की इच्छा है ।”

तथा महिला ने कहा, “परमेश्वर क्या है, एवं परमेश्वर कहाँ है? मैं परमेश्वर को देखना चाहती हूँ ताकि मैं उसके सामने अपना सीना फाड़ सकूँ, तथा उसके कदमों

पर अपने हृदय के लहू उँड़ेल सकूँ। मुझे बताओ कि मैं उसको कहाँ पाऊँगी।"

तथा पादरी ने कहा, "परमेश्वर असीम रूप में व्यापक है। उसे हमारी मानव-आँखों से नहीं देखा जा सकता है।"

तब उस स्त्री ने चिल्लाकर कहा, "अत्यधिक सूक्ष्म ने असीम रूप से व्यापक की इच्छा से मेरे पुत्र का वध किया है! तब हम क्या हैं? हम क्या हैं?"

उसी क्षण महिला की माँ मृतक का कफन लेकर कमरे में आई तथा उसने पादरी की बातें तथा अपनी बेटी की चीख भी सुनी। और उसने कफन रख दिया तथा अपनी पुत्री के हाथ को अपने हाथ में लिया, और कहा, "मेरी बेटी, हम अपने अस्तित्व में अत्यधिक रूप से सूक्ष्म एवं असीम रूप में व्यापक हैं; और हम दोनों के बीच का मार्ग हैं।"

व्हेल मत्स्य एवं तितली

एक बार एक साँझ एक पुरुष एवं एक महिला ने अपने आप को एक घोड़ा गाड़ी में साथ साथ पाया। वह उससे पूर्व मिल चुके थे।

वह व्यक्ति एक कवि था, तथा जैसे ही वह महिला के सन्निकट बैठा उसने महिला को उन कथाओं द्वारा मनोरंजन प्रदान करना चाहा, जिनमें से कुछ की रचना उस ने स्वयं की थी, और कुछ ऐसी थीं जो उसकी नहीं थीं।

परंतु वह बात सुना ही रहा था कि महिला निद्रा को प्राप्त हो गई। तब अचानक गाड़ी को झटका लगा, और वह जागरूक हुई एवं उसने कहा, "मैं यूनुस तथा व्हेल की कहानी पर आप की व्याख्या की सराहना करती हूँ।"

तथा कवि ने कहा, "परंतु महोदया, मैं तो आप को स्वयं मेरे द्वारा रचित कथा सुना रहा हूँ जो एक तितली एवं तथा श्वेत गुलाब के बारे में है, तथा यह कि उन्होंने एक दूसरे के साथ कैसा व्यवहार किया था!"

प्रतिच्छाया

जून मास में एक दिन घास के एक तृण ने देवदार वृक्ष की प्रतिच्छाया से कहा, “तुम प्रायः दायें बायें हिलते रहते हो, और तुम मेरी शांति में विघ्नकारी होते हो।”

तथा प्रतिच्छाया ने उत्तर दिया, “मैं नहीं, मैं नहीं। आकाश की ओर देखो। एक वृक्ष है जो वायु में, सविता एवं पृथ्वी के बीच, पूर्व एवं पश्चिम की ओर हिलता है।”

तथा घास के तृण ने ऊपर देखा, एवं पहली बार वृक्ष का दर्शन किया। तथा उसने अपने हृदय में कहा, “लो, अवलोकन करो, मेरे अस्तित्व से भी विशाल एक घास है।”

तथा घास चुप हो गई।

संक्रामक शांति

एक पुष्पपूर्ण ने अपनी पड़ोसन ड़ाली से कहा, “यह एक निष्प्राण एवं निष्प्रभ दिन है।”

तथा दूसरी ड़ाली ने उत्तर दिया, “यह सचमुच में निष्प्राण एवं निष्प्रभ है।”

तथा उसी क्षण उनमें से एक शाखा पर एक गौरैया उतरा, एवं फिर दूसरा गौरैया पास में उतरा। और उनमें से एक गौरैया चहचहा कर बोला, “मेरी संगिनी मुझे छोड़कर चली गई है।”

एवं दूसरा गौरैया भी विलाप करने लगा, “मेरी सहचरी भी चली गई है और वह नहीं लौटे गी। हाए मैं क्या करूँ?”

फिर दोनों कलरव तथा दुर्वचन प्रस्तुत करने लगे, एवं शीघ्र ही वे एक दूसरे से लड़ रहे तथा हवा में अप्रिय कोलाहल उत्पन्न कर रहे थे।

अकस्मात् आकाश में तैरती हुईं दो अन्य गौरैयाँ आयीं, तथा वे दोनों बेचैन चिड़ियों के बगल में खामोशी के साथ बैठीं। अतः वहाँ चुप्पी पैदा हुई, शांति का वातावरण विद्यमान हुआ।

तब चारों एक साथ उड़ गए, युगल रूप में। और पहले ने अपनी पड़ोसन शाखा से कहा, “वह कोलाहल की एक शक्तिशाली उत्तेजकता थी।” तथा दूसरी शाखा ने जवाब दिया, “तुम उसे जो चाहो कहो, अब शांति एवं व्याप्ति दोनों समक्ष हैं। और यदि ऊपरी पवन शांति

पैदा करे, तो मुझे लगता है कि जो निचले वातावरण में रहते हैं, वे भी शांति पैदा करेंगे। क्या तुम पवन में मेरे ज़रा और निकट नहीं झूम सकते?"

और पहले ने कहा, "अरे, संयोग से, शांति के लिए, वसंत के अंत से पहले।"

और तब उसे आलिंगन करने के लिए उसने स्वयं को, बलशाली वायु के साथ, लहरा दिया।

सत्तर

कवि यौवन ने राजकुमारी से कहा, “मुझे तुमसे प्यार है।” तथा राजकुमारी ने कहा, “मैं भी तुमसे प्यार करती हूँ, मेरे बच्चे।”

“परंतु मैं तुम्हारा बच्चा नहीं हूँ। मैं एक आदमी हूँ तथा मैं तुमसे प्यार करता हूँ।”

तथा उसने कहा, “मैं बेटों एवं बेटियों की माँ हूँ, तथा वे अपने अपने पुत्रों एवं पुत्रियों के माता एवं पिता हैं, तथा मेरा एक पोता तुम से अधिक उम्र का है।”

और कवि यौवन ने कहा, “परंतु मैं तुमसे प्यार करता हूँ।”

इसके बाद अधिक समय नहीं बीता था कि राजकुमारी का निधन हो गया। परंतु इससे पहले कि उसकी आखिरी साँस का भूमि का बृहत् साँस पुनः स्वागत करता, उस ने अपनी आत्मा में कहा, “मेरे प्रियतम, मेरे एक मात्र पुत्र, मेरे कवि यौवन, हो सकता है कि किसी दिन हम फिर मिलेंगे तथा मैं सत्तर वर्ष की नहीं हूँगी।”

परमेश्वर की तलाश

दो व्यक्ति एक उपत्यका में चल रहे थे, तथा एक व्यक्ति ने अपनी उंगली से पर्बत की ओर इशारा करके कहा, “तुम इस कुटिया को देख रहे हो? वहाँ एक आदमी रहता है जो बहुत पहले ही दुनिया को त्याग कर चुका है। उसे ज़मीन पर केवल परमेश्वर की तलाश है, किसी अन्य की नहीं।”

तथा दूसरे आदमी ने कहा, “जब तक वह अपनी कुटिया एवं अपनी झोंपड़ी की गोपनीयता को छोड़कर, हमारी खुशी तथा दर्द को बाँटने, विवाह के सम्मेलनों में हमारे नृतकों के साथ नाचने तथा हमारे पुरुषों की अर्थियों के समीप रोने वालों के साथ रोने के लिए हमारी इस दुनिया में वापस नहीं लौटेगा तब तक वह परमेश्वर को नहीं पा सकेगा।”

और दूसरा व्यक्ति अपने हृदय में उसका कायल हो गया, हालांकि सहमत होने के बावजूद भी उसने जवाब दिया, “मैं आप की सभी बातों से सहमत हूँ, फिर भी मेरा विश्वास है कि साधु एक अच्छा आदमी है। तथा क्या यह अच्छा नहीं हो सकता कि एक पुण्यात्मा अपनी अनुपस्थिति से उन अधिकांश बाहिरी सज्जनता वाले लोगों की तुलना में बेहतर करता हो?”

सरिता

कदीशा की घाटी में जहाँ शक्तिशाली सरिता बहती है, दो नदियां मिलीं तथा एक दूसरे से बातचीत की।

एक नदी ने कहा, "तुम कैसे आई, मेरी सहेली, तथा तुम्हारा रास्ता कैसा था?"

तथा दूसरे ने जवाब दिया, "मेरा रास्ता सबसे अधिक बाधाओं भरा था। पनचक्की का पहिया टूट गया था, तथा मुझे नहर से अपने पौधों तक ले जाने वाला सज्जन किसान मर गया। और जो धूप में बैठ कर अपना आलस्य पकाने के बिना कुछ नहीं करते, मैं उनकी गंदगी बहाते ले जाने का संघर्ष करती हुई आई। परंतु तुम्हारा रास्ता कैसा था, मेरी बहन?"

तथा दूसरी नदी ने उत्तर में कहा, "मेरा एक अलग मार्ग था। मैं पहाड़ियों से नीचे सुगंधित फूलों तथा शर्मीली धुनकियों के बीच से होकर आई, पुरुष एवं महिलाओं ने चाँदी के कटोरों में मेरा जल पिया, और नन्हे मुने बच्चे मेरे किनारों पर अपने गुलाबी पैरों से खेले, तथा मेरे आसपास खिसखिलाहट थी, मीठे गीत थे। कितने दुख की बात है कि तुम्हारा पथ इतना उल्लासपूर्ण नहीं था।"

तथा उसी क्षण प्रवाहिनी ने एक ज़ोरदार आवाज़ लगाई और कहा, "इधर आओ ! इधर आओ ! हम समुद्र में जा रहे हैं। इधर आओ, इधर आओ, अब और मत बोलो। अब मेरे साथ हो चलो। हम समुद्र की ओर जा

रहे हैं । इधर आओ, इधर आओ, क्योंकि मुझमें समा कर तुम अपने पर्यटन को भूल जाओगे, चाहे वह दुख भरी हो या सुख से पूर्ण । इधर आओ, इधर आओ ! और तुम एवं मैं अपने सभी रास्तों को भूल जाएँगे जब हम अपनी माता श्री, महासागर के हृदय में पहुँचेंगे ।”

दो शिकारी

मई के एक दिन की बात है, खुशी तथा गम एक झील के किनारे मिले। उन्होंने एक दूसरे को शिष्टाचार बजा लाया, और वह मौन जल के समीप बैठ कर बातचीतमग्न हो गए।

खुशी पृथ्वी पर मौजूद सौंदर्य के बारे में बोली, और जंगलों एवं पहाड़ियों के बीच जीवन के दैनिक अचरज, तथा सुबह एवं शाम के समय सुनाई देने वाले गीतों के बारे में कलाम किया।

फिर गम बोला, उसने खुशी द्वारा व्यक्त सभी बातों से सहमति जनायी; क्योंकि गम को समय का इन्द्रजाल एवं उसकी सुंदरता का ज्ञान था। और गम ने जब खेतों में एवं पहाड़ियों के बीच मई के बारे में वार्तालाप की तो वह सुवक्ता था।

और खुशी एवं गम साथ में देर तक बातें करते रहे, और उन्होंने अपनी जानकारी की सभी बातों में सहमति व्यक्त की।

तब, झील के दूसरे किनारे से दो शिकारी गुज़रे। तथा जैसे ही उन्होंने पानी के उस पार देखा, उनमें से एक ने कहा, “मैं हैरान हूँ कि वे दो लोग कौन हैं?” तथा दूसरे ने कहा, “क्या तुम ने दो कहा? मैं तो केवल एक ही को देख सकता हूँ।”

पहले आखेटक ने कहा, “परंतु वे तो दो हैं।” और दूसरे ने कहा, “वहाँ तो मैं केवल एक ही देख पाता हूँ,

एवं झील में प्रतिवर्तन भी केवल एक है।"

"नहीं, दो हैं," पहले व्याध ने कहा, "तथा ठहरे हुए पानी में प्रतिच्छाया भी दो लोगों की है।"

परंतु दूसरे व्यक्ति ने फिर कहा, "मैं तो केवल एक ही देख रहा हूँ।" एवं पुनः एक बार दूसरे व्यक्ति ने कहा, "परंतु मैं दो को इतने स्पष्ट रूप से देख सकता हूँ।"

और आज तक भी एक शिकारी यही कहता है कि दूसरा दोगुना देखता है, जबकि दूसरा कहता है, "मेरा मित्र कुछ अंधा है।"

दूसरा महामहिम घुमक्कड़

एक समय की बात है कि मेरी मुलाकात एक दूसरे घुमक्कड़ से हुई । वह भी थोड़ा थोड़ा पागल था, तथा वह इन शब्दों के साथ मुझे संबोधन करने लगा :

"मैं एक घुमक्कड़ हूँ । अक्सर मुझे ऐसा लगता है कि मैं पृथ्वी पर बौनों के बीच चलता हूँ । और चिनाचि उनकी खोपड़यों से मेरी खोपड़ी ज़मीन से सत्तर अर्द्ध-गज़ अधिक दूर है, यह अधिक उच्च एवं अधिक स्वतंत्र विचारों की सृजनाकार है ।

"परंतु वास्तविकता में मैं लोगों के बीच नहीं बल्कि उनके ऊपर चलता हूँ, तथा वह मेरा अगर कुछ देख पाते हैं तो वह उनके खुले मैदानों में मेरे कदमों के निशान हैं ।

"तथा प्रायः मैंने उन्हें मेरे कदमों के चिह्नो के विषय में चर्चा करते तथा उनके आकार एवं परिमाण के सन्दर्भ में मतभेद करते हुए सुना है । क्योंकि कुछ ऐसे व्यक्ति हैं जो कहते हैं, 'यह मैमथ [महाकाय हाथी] के क़दमों के निशान हैं जो बहुत पहले पृथ्वी पर घूमा करता था ।' तथा दूसरे कहते हैं, 'नहीं, यह वह स्थान है जहाँ दूर के सितारों से उल्कापात हुआ था ।'

परंतु तुम, मेरे मित्र, तुम्हें भलीभाँति यह बोध है कि वे एक घुमक्कड़ के पदचिह्नों के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं हैं ।"

....

जून 1989 में कश्मीर से पलायन के पश्चात्, 1991 ई से काठमाण्डौ, नेपाल में आवासित ज़ेहन-निशीन 1979 ई से क्रांतिकारी संघर्ष, मानव-शास्त्र, समाज-शास्त्र, साहित्य, विज्ञान, इतिहास तथा दर्शन-शास्त्र में रुचि से व्यस्त रहे हैं । कई वर्ष एक अध्यापक की हैसियत से कार्य करने के पश्चात् 2006 ई से वह एवरयंग ग्लोबल इन्टेलेक्चुवल फाउन्डेशन, काठमाण्डौ, नेपाल में टीम लीडर एवं संपादक की हैसियत से कार्यरत हैं । "Kashmir and Kilkenny Cats", "Liberating the Future from the Past", "Tenzin Tseten, the Trail and the Trait of the Time", "The Most Perfect Man", "I'm MiniKashmir", "Fourteen Days that Mattered Not in the World", "Contradictions in Special Relativity Theory"... के लेखक हैं ।

ISBN: 978-99946-898-6-6
Typesetter; DTP and Publisher:
Everyoung Global Intellectual Foundation
Contribution: NRs: 800/= or USD 8.00